चकमक

नवम्बर, 2003 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00





आदित्य तैलंग, भोपाल, म.प्र.



रजीना, तीसरी, मोरगढ़ी, हरदा, म.प्र.



रोहित, चौथी, मोरगढ़ी, हरदा, म.प्र.



चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-19 अंक-5 नवम्बर 2003

क्या-क्या है इस अंक में

विशेष लेख

चित्रकथा

नाटक

कविताएँ

खेल व प्रयोग

तुम भी बनाओ

हर बार की तरह



एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

नवम्बर के महीने में यूँ तो कई चीज़ें आती हैं। पर इसकी पहचान बाल दिवस से है। तुम बच्चों से ही हमारी दुनिया का कल है। तो इस तरह तो हर दिन तुम्हारा दिन है। हमारी कोशिश होती है कि तुम्हारे रास्ते की सारी बाधाओं को दूर कर पाएँ। यह दिन हमें इन्हीं ज़िम्मेदारियों की याद दिलाता है। यह एक दिन है कि बड़े सोचें और बच्चों के लिए कुछ करें। कोशिशें हुईं भी, पर अब भी बहुत कुछ किया जाना है।

आज भी दुनिया में हर दिन चालीस हज़ार बच्चे कुपोषण और विभिन्न बीमारियों से मर जाते हैं। हमारी दुनिया के एक अरब बच्चों को बुनियादी शिक्षा तक नसीब नहीं है........ इन आँकड़ों पर सरसरी निगाह डालने से ही कई चीज़ें पता चल जाती हैं। हमारी सरकार अपनी कुल आय का महज़ छह प्रतिशत हिस्सा शिक्षा के लिए रखती है। क्या यह काफी है?

इसके अलावा कई जोखिम वाले उद्योगों में काम करने वाले बच्चों की भरमार है। हरेक बच्चे के लिए अच्छा स्कूल आज भी एक सपना ही है। अधिकांश घरों में आज भी बच्चे माँ-बाप के अधूरे सपनों को पूरा करने के यंत्र बन कर रह जाते हैं। जाति, लिंग, धर्म, आर्थिक हालत जैसे कई कारणों से भी बच्चे पिस रहे हैं। वे स्कूल में हों, घर में हों या काम पर हों, उन्हें चैन नहीं मिलता।

इस सबके बावजूद बच्चे हर जगह जीवटता से लगे हैं। तुम चकमक समाचार में पढ़ोगे... कुछ बाल श्रमिक बच्चों ने पटाखों के खिलाफ मौन प्रदर्शन किया, ताकि इस जोखिम वाले उद्योग में लगे उनके साथी इससे बाहर निकल पाएँ।
हमें उम्मीद है कि अपने हकों के लिए तुम सब भी आवाज़ उठाओगे। एक दिन तुम्हें तुम्हारे हक मिलेंगे..... और तब ये दुनिया बेहतर होगी!

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-5 नवम्बर 2003

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोन्हा
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

सहयोग
राकेश खत्री
शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/ एच आई जी – 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन : 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कुछ मज़ेदार चित्र . . .



※ रजप, हरणगाँव, देवास, म.प्र.



※ ओमप्रकाश राठौर, हरणगाँव, देवास, म.प्र.



※ सीपी धनंजय, भोपाल, म.प्र.

मेरी गुड़िया

मेरी गुड़िया सबसे सुन्दर
दिन भर मेरे साथ रहती
मेरा कहना हर दम मानती
मेरी गुड़िया मेरे साथ सब करती

✻ सोनम तिवारी, चौथी, भोपाल, म.प्र.



✻ अशोक, रतनपुर, देवास, म.प्र.



✻ नौशाद शाह, देवास, म.प्र.

कुछ पहेलियाँ

- काला हूँ पर फूल हूँ
  बारिश में आता सबके काम हूँ
  सिर का ताज सब मुझे बनाते
  बताओ तो लोग मुझे किस नाम से पुकारते?
- तीन कोने की तितली
  नहा धोकर निकली
- द्वार का हूँ द्वारपाल
  करता हूँ घर की रखवाली
  मेरी घरवाली जाती मालिक के साथ
  मुझे छोड़ जाती किवाड़ के पास

✻ प्रस्तुति : रीता सिंह, देवास, म.प्र.

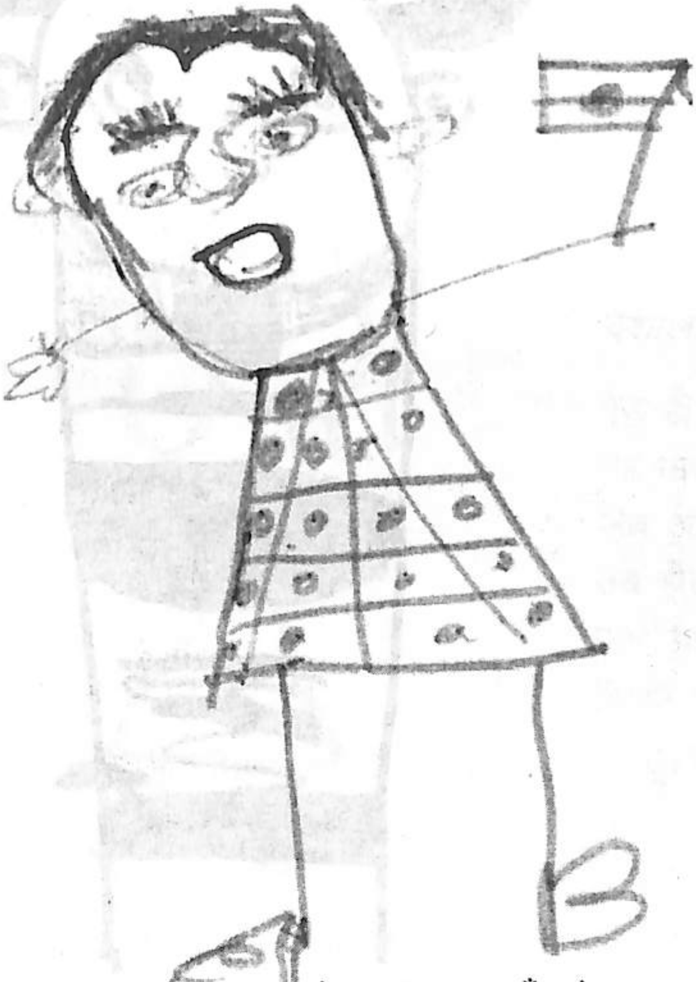
शिक्षा के क्षेत्र में गाँव की स्थिति

प्रायः मैंने देखा है कि गाँव के शासकीय स्कूल सिर्फ नाम के रह गए हैं। आप शहरों में प्रायवेट स्कूल में अधिक खर्च देकर अपने बच्चे को पढ़ा सकते हैं। परन्तु गाँव में चाहकर भी प्रायवेट स्कूल नहीं जा सकते हैं।

जहाँ शासकीय स्कूल में अधिक वेतन तथा अच्छी पोस्टिंग तो होती है। परन्तु टीचर सक्रिय नहीं हैं। विद्यालय में जो विशेष योजना है, उसे बच्चे नहीं सरकारी तंत्र उपयोग में लाते हैं। सभी विषय की पोस्टिंग तो हुई परन्तु सिर्फ कागज़ों पर।



※ बृजेश, हरणगाँव, देवास, म.प्र.



※ रज्जप, हरणगाँव, देवास, म. प्र.

शिक्षकों का ध्यान बच्चे के भाव, उसकी सोच, उसकी चाह पर न होकर दीवार पर लगी घड़ी पर अधिक रहता है। शिक्षक सिर्फ एक से पाँच तारीख तक ही सक्रिय होते हैं।

गाँव में माता पिता भी अधिक ध्यान नहीं दे सकते। परन्तु उनको जागरूक करना भी शिक्षक का कर्तव्य बनता है। मैं चाहता हूँ कि जो शिक्षा महँगे स्कूलों में मिलती है वही सरकारी स्कूलों में मिले। विशेषकर गाँवों में।

※ ओमप्रकाश चन्देल, दसवीं, खातेगाँव, देवास, म.प्र.

मेरा पन्ना

क्या तुमने कभी कोई अधूरी कविता पूरी की है? तुम्हारे हम उमर बच्चों के साथ हमने ये गतिविधि की। कविता की पहली दो लाइनें उन्हें बताईं बस! थोड़ी ही देर में दर्ज़नों कविताएँ तैयार हो गईं। चलो कुछ तुम भी सुनो! कविता की दो लाइनें हैं –

बन्दर नहीं बनाते घर
घूमा करते इधर उधर

राहुल भोपाल के अंकुर स्कूल में
कक्षा सातवीं में पढ़ते हैं। उन्होंने इस कविता को आगे बढ़ाया......

पेड़ों पर चढ़ते धरा धरकर
केला खाते सटक सटक
झूलते हैं मटक मटक
एक बार एक बन्दर
गिरा धम से चटक मटक
एक बार खाली उसने कसम
अब न चढ़ेगा वो सट सटकर
बना डरपोक जब वो बन्दर
उसने करा जादू टोना
कहा अब कभी न पेड़ पे सोना
अब खाने का न था ठिकाना
आखिर में वो मरा तड़प तड़पकर



※ धर्मेन्द्र सेंधव, देवास, म.प्र.



※ इकबाल, पाँचवीं, हरणगाँव, देवास, म.प्र.

एक दूसरी कविता देखो, पहली दो लाइनें वही हैं –

बन्दर मुझे बना देना
लम्बी पूँछ लगा देना
पेड़ों पर मैं चढ़ जाऊँगा
बहुत केले मैं खाऊँगा
अपना मुँह पिचकाऊँगा
सबको बहुत हँसाऊँगा

सुमित स्वामी ने बनाई है यह कविता।
वे आठवीं में पढ़ते हैं।



※ ओमप्रकाश राठौर, देवास, म.प्र.



※ सोनम तिवारी, चौथी, भोपाल, म.प्र.

वैशाली की कविता भी पढ़ो –

पेड़ ही उनका घर है
यह वह समझते हैं
जब आती बरसात
तब होती उनको परेशानी
जुएँ जो वह देखते हैं
किसी के सर में
तो तुरन्त साफ कर देते हैं
उनका सर
बन्दर नहीं बनाते घर
घूमा करते इधर उधर



मेरा बगीचा



एक बार की बात है। मैं बगीचे में पानी डाल रहा था। अचानक वहाँ एक साँप आ गया। वो मेरे पीछे लपक गया। वो उचका मैं कूदा। जब से मैं बगीचे में पानी डालने के नाम से डरता हूँ।

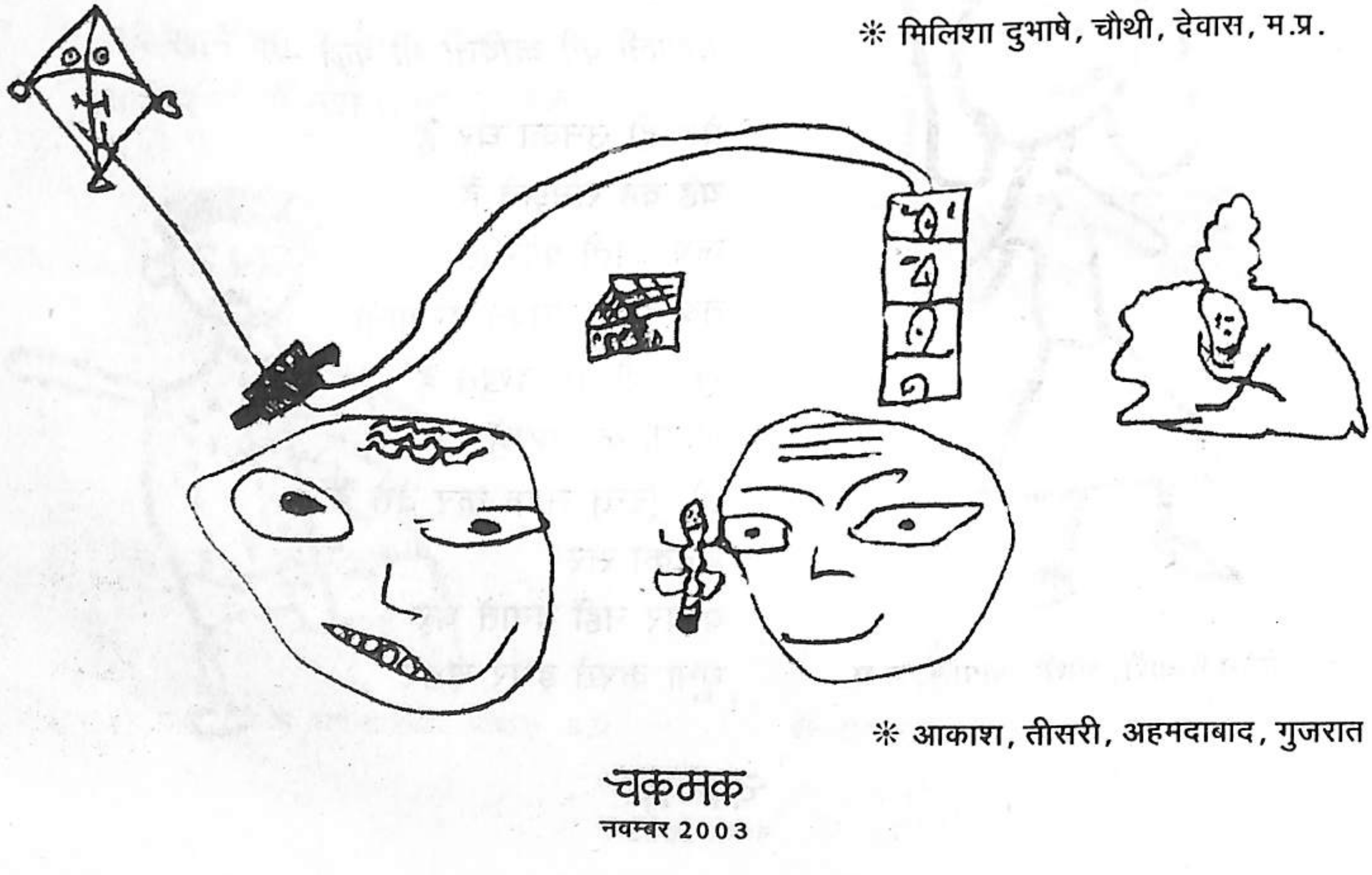


※ यावर उर रहमान, दस साल, भोपाल, म.प्र.

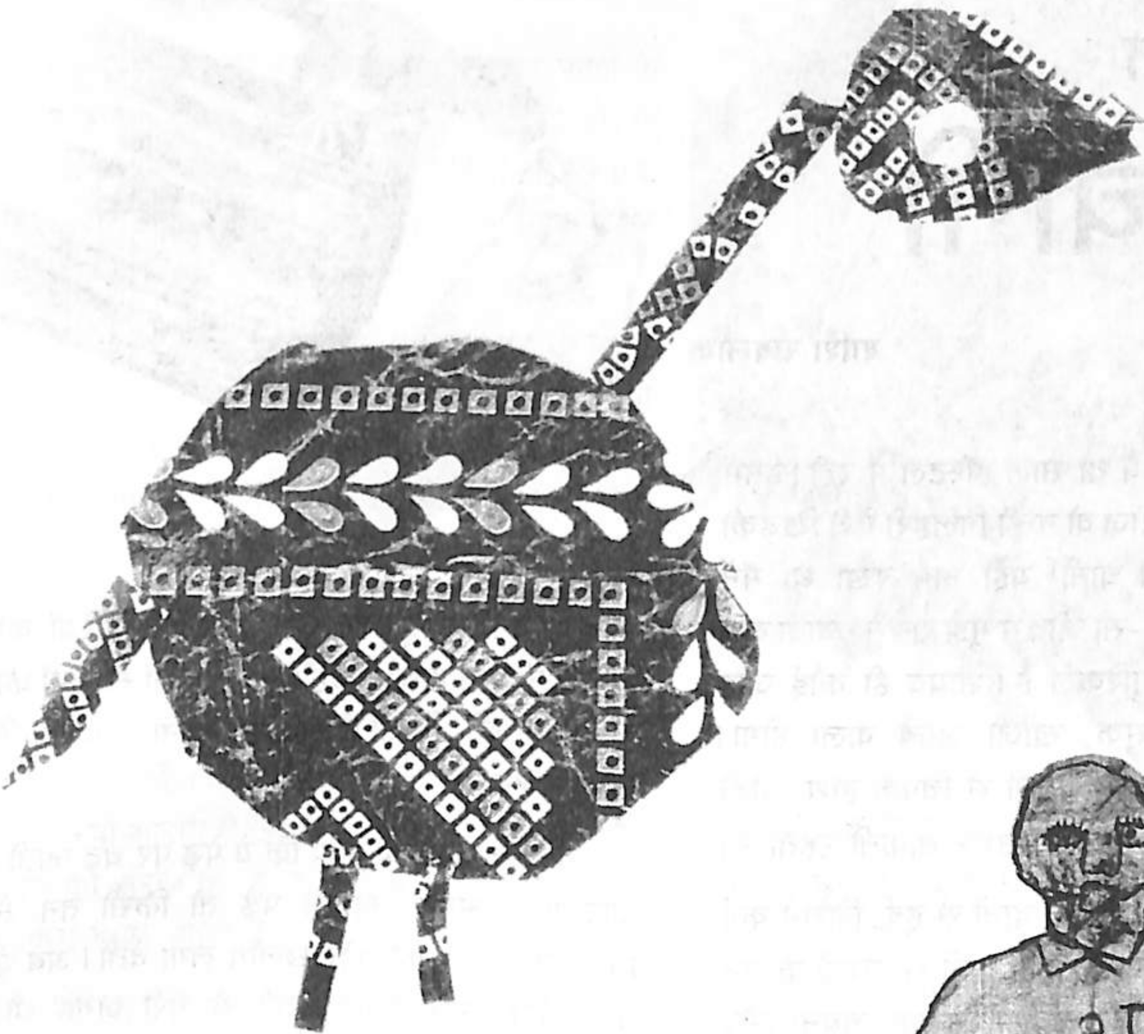
श्यामा गैया

श्यामा गैया, श्यामा गैया
दूध पिला दो हमको
चार थनों से एक गिलास
एक पिएगा बछड़ा मेरा
एक गुड्डे का एक गुड़िया का
एक पियोगे तुम

※ मिलिशा दुभाषे, चौथी, देवास, म.प्र.



※ आकाश, तीसरी, अहमदाबाद, गुजरात

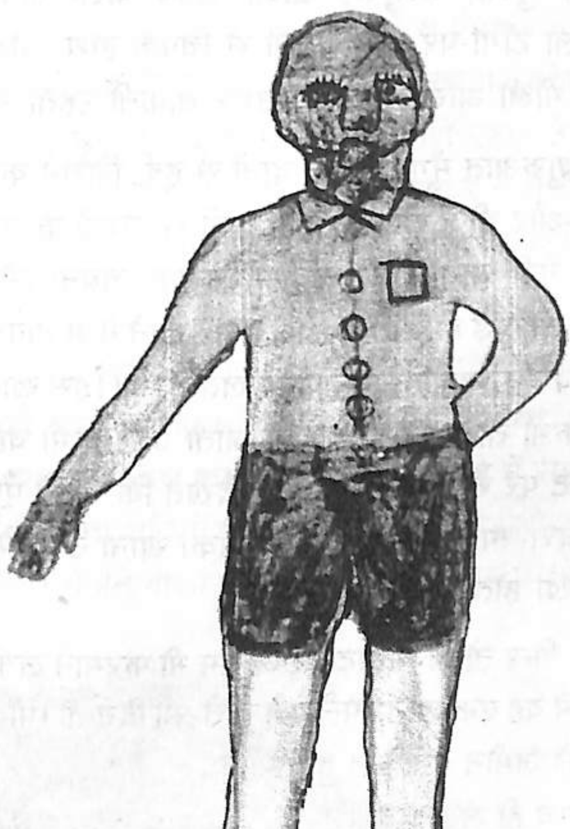


※ आशीष, चौथी, हरणगाँव, म.प्र.

एक बार....

एक बार एक बच्चे को सड़क पार करनी थी। तब उसे देखकर उसके भाई ने पूछा कि तुम रोड पार क्यों नहीं कर रहे हो। तब उसने बोला कि माँ ने कहा था कि जब तक पहले वाहन पार होने देना, फिर जाना। पर अभी तक तो कोई वाहन ही नहीं निकला है!

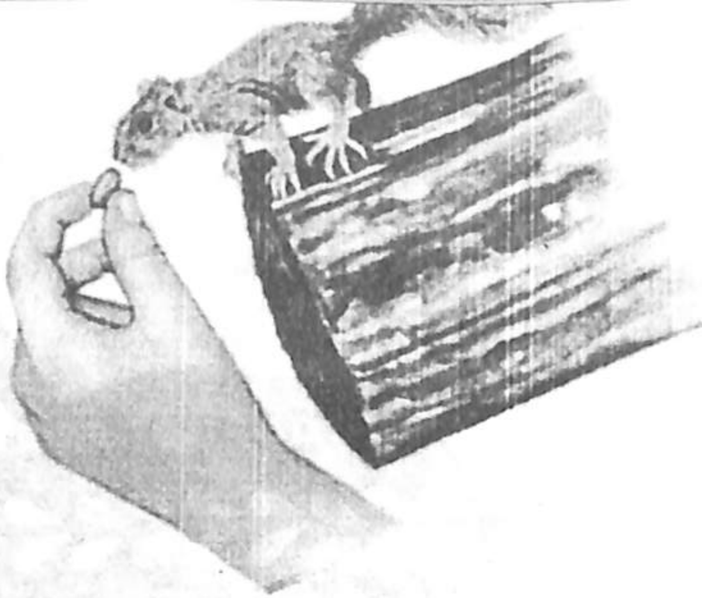
※ निकिता, चौथी, भोपाल, म. प्र.



※ संदीप शर्मा, चौथी, सिरमौर, हि.प्र.

मेरी दोस्त चानी

शशि सबलोक



पढ़ाई के दौरान मैं दो साल हॉस्टल में रही। इनमें से डेढ़ साल तक रोज़ वो नन्ही गिलहरी मेरी खिड़की पर दस्तक देती। चानी! यही नाम रखा था मैंने उसका। इस नन्ही -सी जीव में मुझे सबसे ज़्यादा क्या पसंद है, चुनना मुश्किल है। शायद ही कोई जीव इतना चुस्त, उत्सुक, खोजी जज़्बे वाला होगा। पिछली टाँगों पर खड़े, छाती से चिपके हाथ, चौड़ी और गीली आँखों से इधर-उधर ताकती रहती है।

शुरुआत मूँगफली के दानों से हुई, जिसमें कई और-और चीज़ें जुड़ती गईं। चानी से दोस्ती के उन दिनों मेरी सामान की सूची में उसका चबेना और मूँगफली जुड़ ही जाते थे। वैसे हमारे खाने में से चावल रोटी का उसका हिस्सा तो निकलता ही था। इस खाने को कभी तो वह पेड़ों पर ले जाती और कभी वहीं चौखट पर खा लेती। कभी हम देखते कि उसने पूँछ का घेरा-सा बनाया हुआ है। उसका खाना उसी घेरे में रखा होता।

फिर तो वो चौखट पर आराम भी फरमाने लगी। ऐसे में वह एक शांत स्पैनियल कुत्ते-सी दिखती। पाँव तिरछे ज़मीन पर फैले हुए, पाँवों के बीच ही लेटा पड़ा सिर और ज़मीन पर लुढ़की पूँछ। पर गिलहरियों की दुनिया में बहुत आराम कहाँ! कभी कौओं से बच्चों की हिफाज़त की चिन्ता तो कभी खाना जुटाने की जद्दोजहद!

ज़रा-सा खटका हुआ कि ये पेड़ पर चढ़ जाती। और फिर अगर ज़रूरत पड़े तो किसी तने से चिपककर आगे की ओर छलाँग लगा देती। अब यूँ तो ज़मीन इनके लिए खतरे से भरी जगह थी। मज़ेदार बात तो यह है कि डर में इनका हाल भी हम इंसानों के जैसा ही हो जाता है। घबराहट से इनकी हथेलियाँ अक्सर पसीने से नहा जाती हैं।

चानी के बारे में मुझे बहुत-सी बातें कॉलेज के दिनों की मुलाकातों से ही पता चलीं। मैंने तो उसका घर भी ढूँढ लिया था। कुछ बातें मैंने किताबों में भी पढ़ीं। गिलहरियाँ बढ़िया पंसारी होती हैं। वे अपने दोनों पंजों पर खाने की चीज़ें रखकर उनकी कीमत आँकती हैं। वो इन चीज़ों की



ताज़गी की जाँच भी कर लेती हैं। गिरीदार फलों के अलावा फफूँद, कलियाँ, बीज या फिर कीड़े हों, वो सब चट कर जाती हैं। एक बार सर्दियों में मैंने एक गिलहरी को देखा....वो पेड़ की छाल निकालकर उसका मीठा रस पी रही थी।

गिलहरियों के दोनों हाथों में चार चार उँगलियाँ होती हैं। वे अगले पाँवों या कहो हाथों से खाना पकड़ती हैं और कुतरने लगती हैं। फलों के छिलके गिलहरी को नहीं भाते हैं। चाहे वो सेब हो, या फिर नरमानरम अंगूर!

गिलहरियाँ कभी-कभार अपने पिछले पैरों के सहारे पेड़ों पर उलटा भी लटकती हैं। हाँ, बिल्कुल चमगादड़ों की तरह। इस वक्त उनका पेट शाख से चिपका होता है। और अगले पाँवों में खाना दबा होता है जिसे वो आराम से खा रही होती हैं। अलस्सुबह और शाम को सूरज ढलने के बाद ये ज़्यादा चुस्त और सक्रिय नज़र आती हैं।

गिलहरी के बच्चे भी कम उस्ताद नहीं होते। पैदा होने के बाद वे पाँच हफ्तों तक देख नहीं पाते। इस दौरान इनका सब कुछ सूँघने, सुनने, छूने पर निर्भर करता है। कोई आश्चर्य नहीं कि इसी वजह से ये विभिन्न तरह की गिरियों, खाली और भरी गिरियों, सड़ी और ताज़ी चीज़ों में भेद कर पाती हैं। वह भी उनके गंध और उनके वज़न के आधार पर।



छोटे बच्चे अपने पत्तों के घरों से निकलते समय अच्छा खासा देखने लग जाते हैं। हाँ, खाना ढूँढना और माँ को ढूँढना गंध के ज़रिए ही जारी रहता है। घर पर लाए खाने को माँ थोड़ा-सा चबाकर बच्चे के मुँह में डालती है। याद करो हमें भी तो बचपन में खूब मसलकर खाना दिया जाता था।

गिलहरी की बात हो और उसकी पूँछ का ज़िकर न हो, ऐसा कैसे हो सकता है। क्या क्या रूप नहीं धरती ये झबरीली पूँछ! कभी यह संतुलन बैठाने में सहायक होती है, तो सर्दियों में मफलर हो जाती है। और कभी संकेत भेजने वाला झण्डा। बरसातों में यह छतरी का

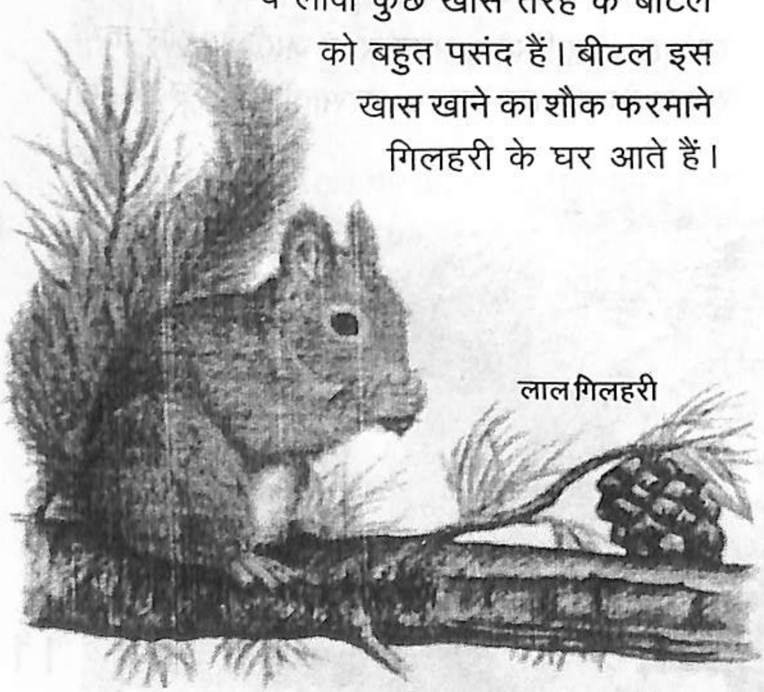




काम करती है। अपने बच्चों के लिए रज़ाई के रूप में भी गिलहरी इसे इस्तेमाल करती है।

गिलहरी का घर सिर्फ उसका ही घर नहीं होता। कितने कीड़ों, मकड़ियों, दीमकों और चिचड़ों को भी वहाँ जगह मिल ही जाती है। गिलहरी खुद कोई जीव नहीं खाती है। तभी तो इसके घर में ये सब जीव पनपते हैं।

धूसर गिलहरी की कहानी के तो कहने ही क्या! उसका घर खास तरह के पिस्सुओं का आश्रय स्थल होता है। उनके लार्वा भी कभी-कभी यहीं पनपते हैं। ये लार्वा कुछ खास तरह के बीटल को बहुत पसंद हैं। बीटल इस खास खाने का शौक फरमाने गिलहरी के घर आते हैं।



लाल गिलहरी

और इन बीटलों को खाने कुछ और कीड़े आते हैं। और इस तरह बेचारी गिलहरी का घर कई जीवों का अड्डा बन जाता है।

कोई नहीं जानता है कि गिलहरियाँ अपने बच्चों को उठाकर दूसरे घोंसलों में क्यों ले जाती हैं। शायद इन कीड़ों से होने वाली बीमारियों से बच्चों की हिफाज़त हो सके इसलिए! घर बदलने की कहानी कुछ ऐसी होती है। गिलहरी बच्चों को उनके पेट से पकड़े एक-एक कर दूसरे घर में पहुँचाती है। बच्चे अपनी टाँगों को उसके गले के इर्द-गिर्द लपेटे होते हैं। गिलहरी के बच्चों के भरण पोषण का जिम्मा माँ पर ही होता है। पिता तो हफ्तों नज़र ही नहीं आते हैं।



धूसर गिलहरी

सर्दियों का मौसम यानी कुछ कम मुश्किलों का मौसम! इन दिनों ये काम ज़रा कम करती हैं। इससे कुछ ऊर्जा बच जाती है। इन दिनों के लिए वे खाना पहले ही जुटा लिया करती हैं।

उन दिनों मैं होस्टल छोड़ने वाली थी। चानी का आना-जाना ज़रा कम हो गया था। सर्दियों के दिन जो थे। आते वक्त चानी से चाहकर भी मिलना नहीं हो पाया। पता नहीं.... जैसे उसके बारे में लिखते हुए वो बार-बार याद आती है , शायद वह भी मेरे बारे में सोचती हो खिड़की पर आते-जाते....कौन जाने!



उड़न गिलहरी



कुछ रोचक तथ्य

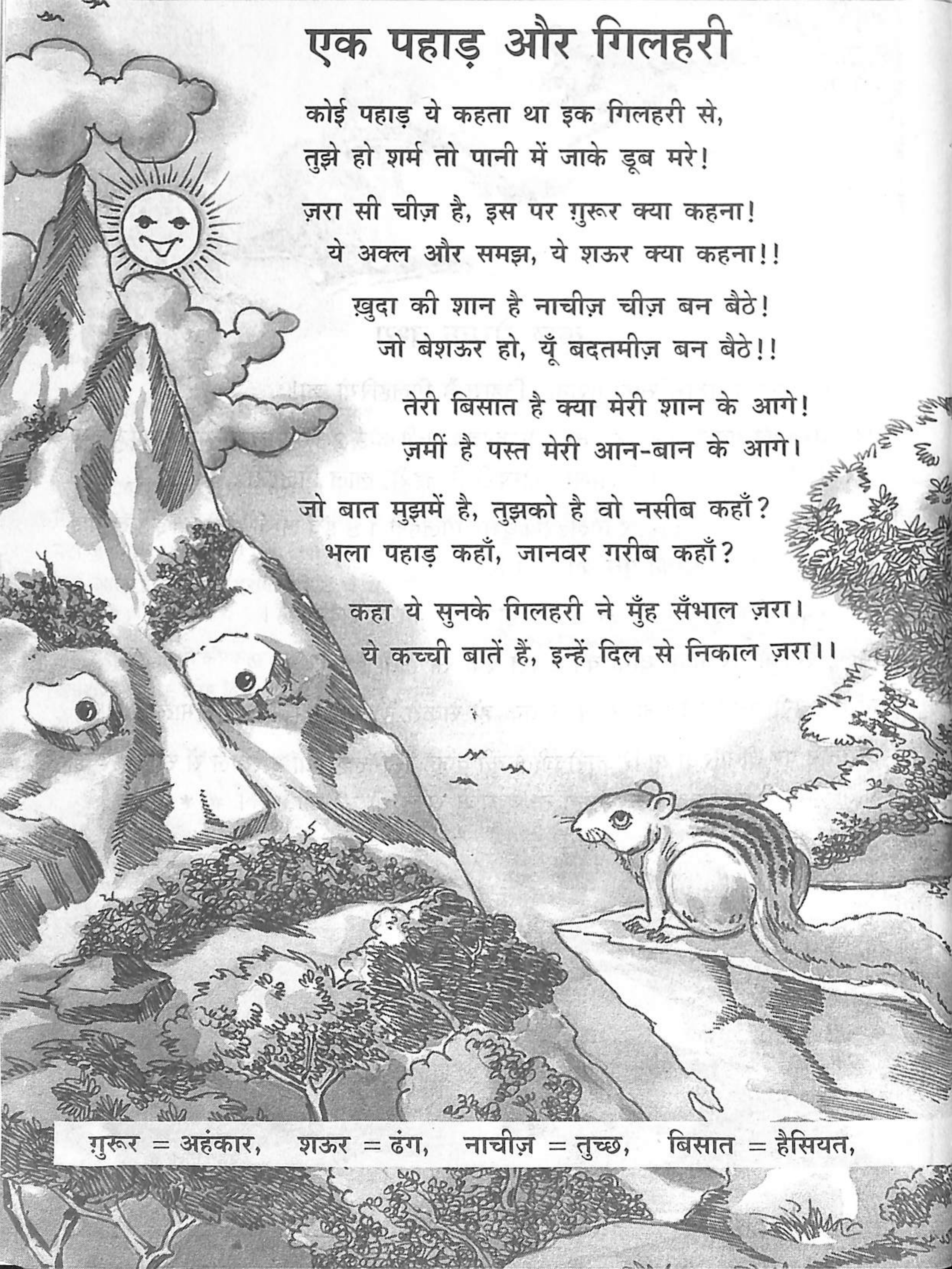
* पूरे तीन करोड़ पचास साल पुराना इतिहास है गिलहरियों का!
* तरह-तरह की शक्लें और तरह-तरह के करतब वाली कोई 230 गिलहरी प्रजातियाँ दुनिया भर में बिखरी हैं। उड़न गिलहरी, लोम्बड़ी गिलहरी, लाल गिलहरी.... आदि!
* इन प्रजातियों में एक है धूसर गिलहरी। धूसर गिलहरी 18 इंच लम्बी होती है। इस लम्बाई का आधा हिस्सा उसकी पूँछ का होता है।
* एक जवान गिलहरी 300 से 650 ग्राम तक की हो सकती है।
* गिलहरियों में नर मादा दोनों की शक्लें एक सी होती हैं।
* माँ गिलहरी बच्चों को (जो 3 से 5 तक हो सकते हैं) दस हफ्तों तक संभालती है।
* आमतौर पर बीमारियों या शिकारी जीवों की वजह से गिलहरियाँ मुश्किल से साल भर जी पाती हैं। पर पालतू बनाकर रखो तो ये बीस साल भी जी जाती हैं। * * *





उड़न गिलहरी

एक पहाड़ और गिलहरी



कोई पहाड़ ये कहता था इक गिलहरी से,
तुझे हो शर्म तो पानी में जाके डूब मरे!

ज़रा सी चीज़ है, इस पर ग़ुरूर क्या कहना!
ये अक्ल और समझ, ये शऊर क्या कहना!!

ख़ुदा की शान है नाचीज़ चीज़ बन बैठे!
जो बेशऊर हो, यूँ बदतमीज़ बन बैठे!!

तेरी बिसात है क्या मेरी शान के आगे!
ज़मीं है पस्त मेरी आन-बान के आगे।

जो बात मुझमें है, तुझको है वो नसीब कहाँ?
भला पहाड़ कहाँ, जानवर गरीब कहाँ?

कहा ये सुनके गिलहरी ने मुँह सँभाल ज़रा।
ये कच्ची बातें हैं, इन्हें दिल से निकाल ज़रा।।

ग़ुरूर = अहंकार, शऊर = ढंग, नाचीज़ = तुच्छ, बिसात = हैसियत,

जो मैं बड़ी नहीं तेरी तरह तो क्या परवाह!
नहीं है तू भी तो आखिर मेरी तरह छोटा।

हरेक चीज़ से पैदा ख़ुदा की कुदरत है।
कोई बड़ा, कोई छोटा, ये उसकी हिक़मत है।।

बड़ा जहान में तुझको बना दिया उसने।
मुझे दरख़्त पे चढ़ना सिखा दिया उसने।।

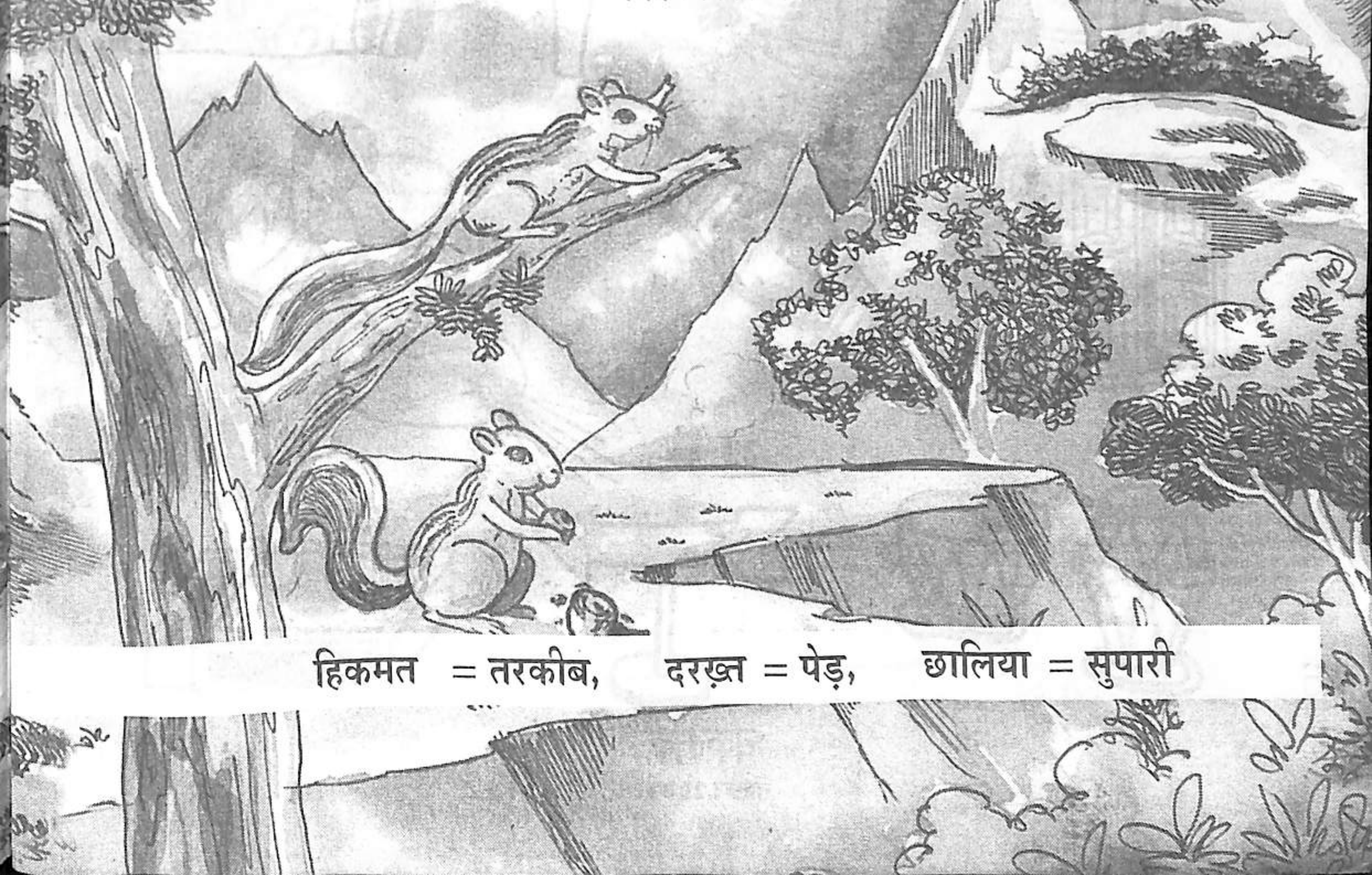
कदम उठाने की ताकत नहीं ज़रा तुझमें।
निरी बड़ाई है, खूबी है और क्या तुझमें?

जो तू बड़ा है तो मुझसा हुनर दिखा मुझको!
ये छालिया ही ज़रा तोड़कर दिखा मुझको!!

नहीं है चीज़ निकम्मी कोई ज़माने में।
कोई बुरा नहीं कुदरत के कारखाने में।।

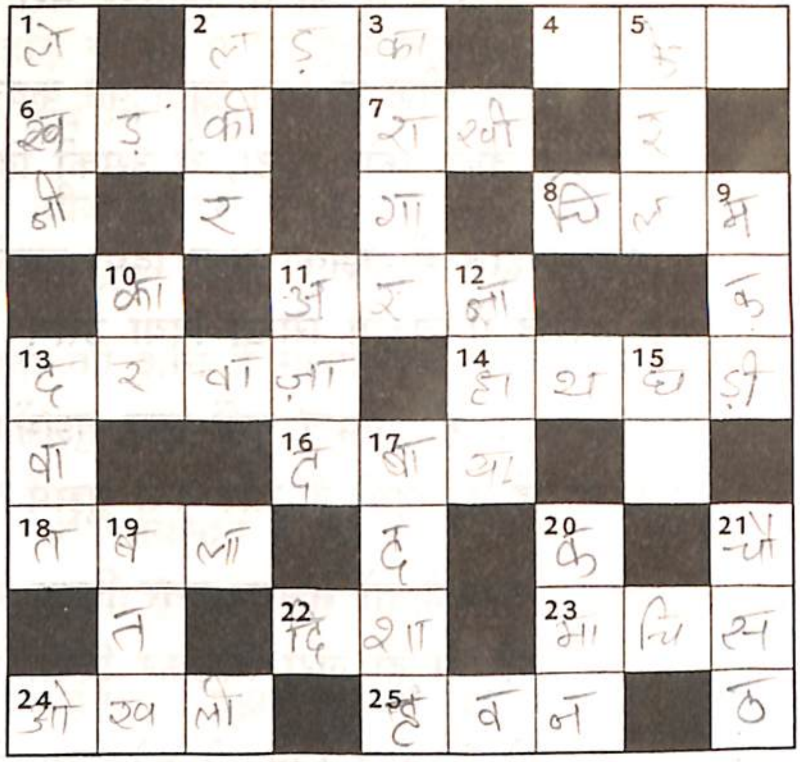
इक़बाल

चित्र : विवेक वर्मा



हिकमत = तरकीब, दरख़्त = पेड़, छालिया = सुपारी

चित्र-पहेली



2.



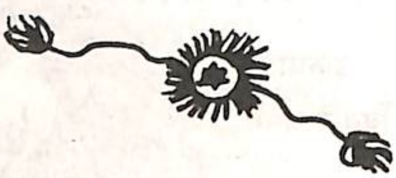
4.



6.



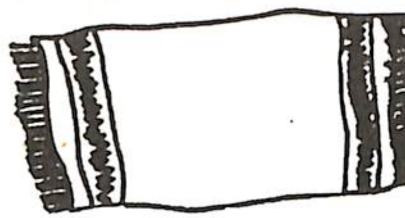
7.



8.



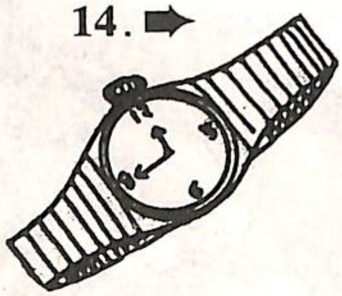
11.



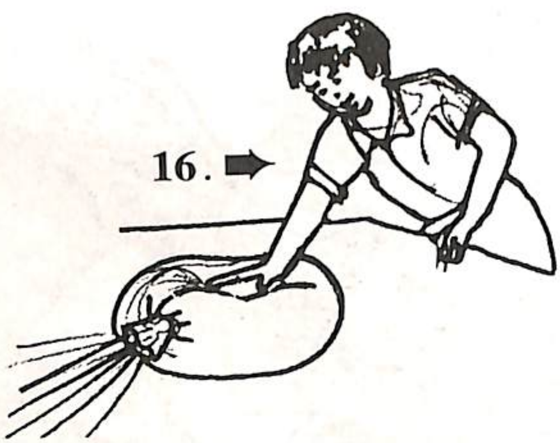
13.



14.



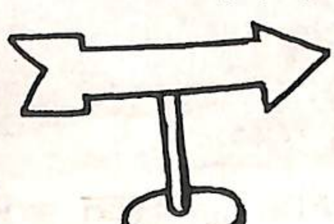
16.



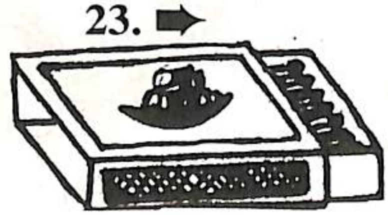
18.



22.

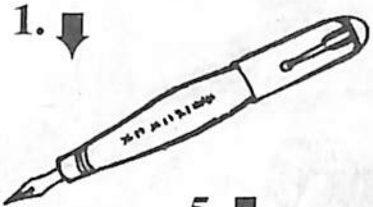


23.



24. ➡


25. ➡

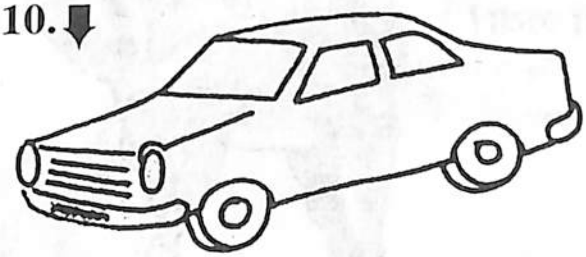

1. ⬇


2. ⬇

3. ⬇


5. ⬇

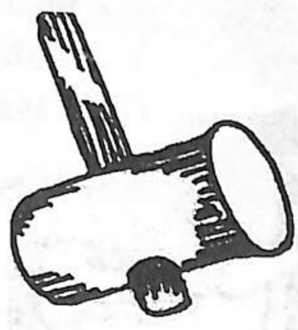

9. ⬇


10. ⬇


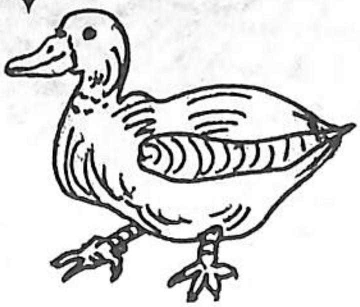
11. ⬇

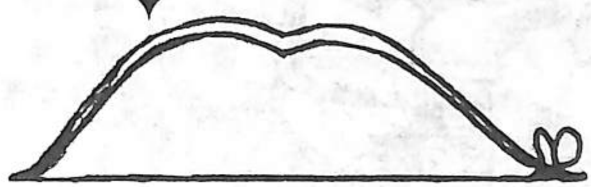

12. ⬇


13. ⬇


15. ⬇


17. ⬇

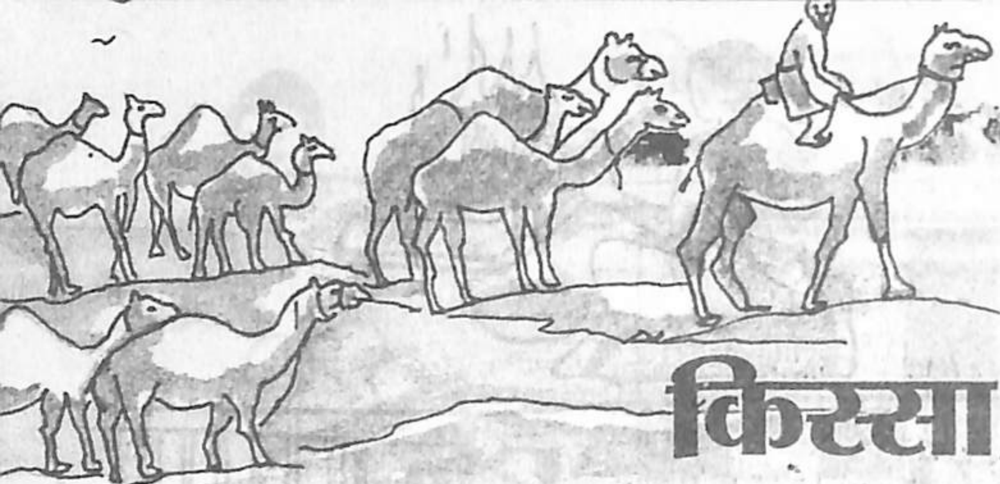

19. ⬇


20. ⬇


21. ⬇

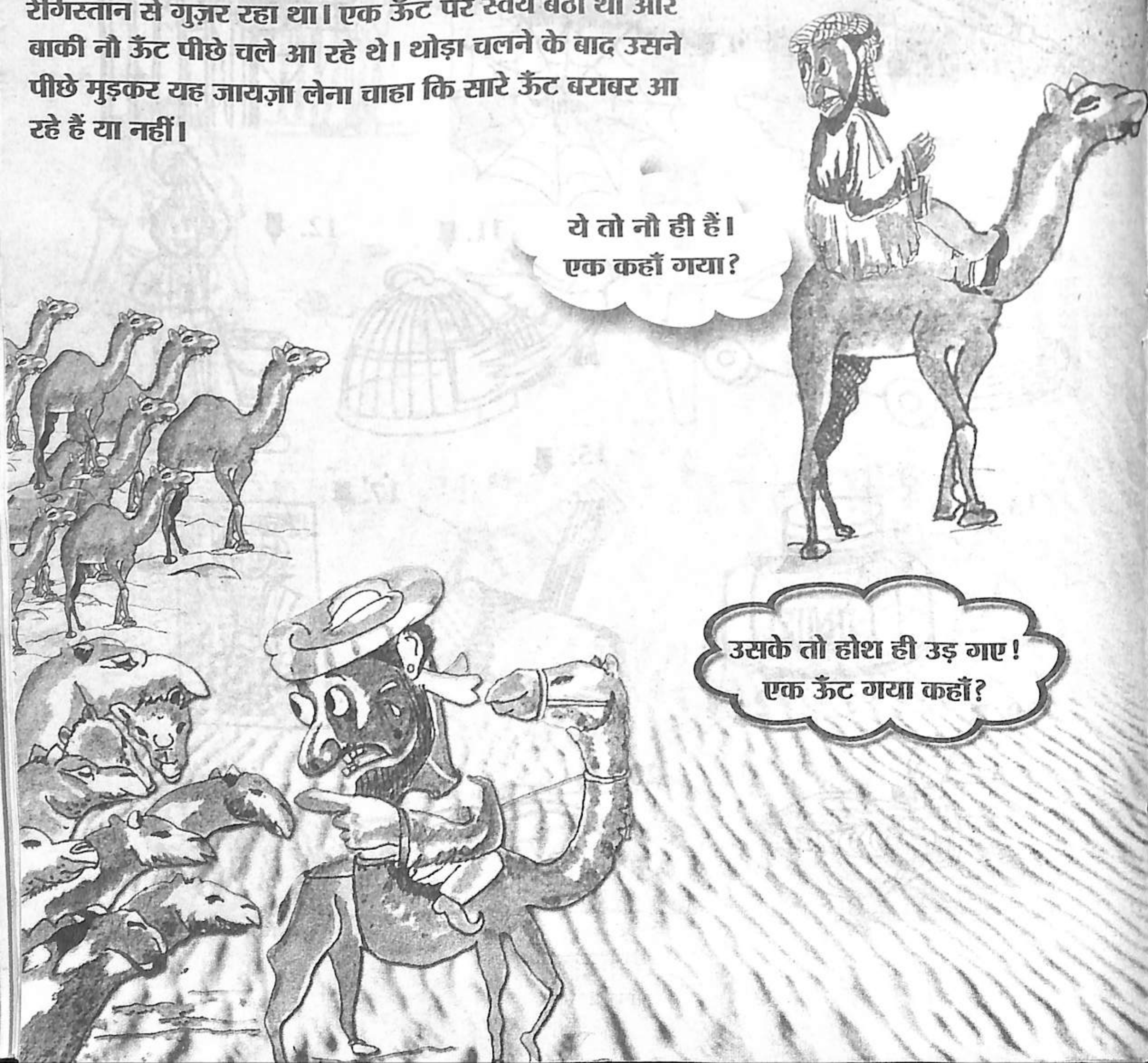
64

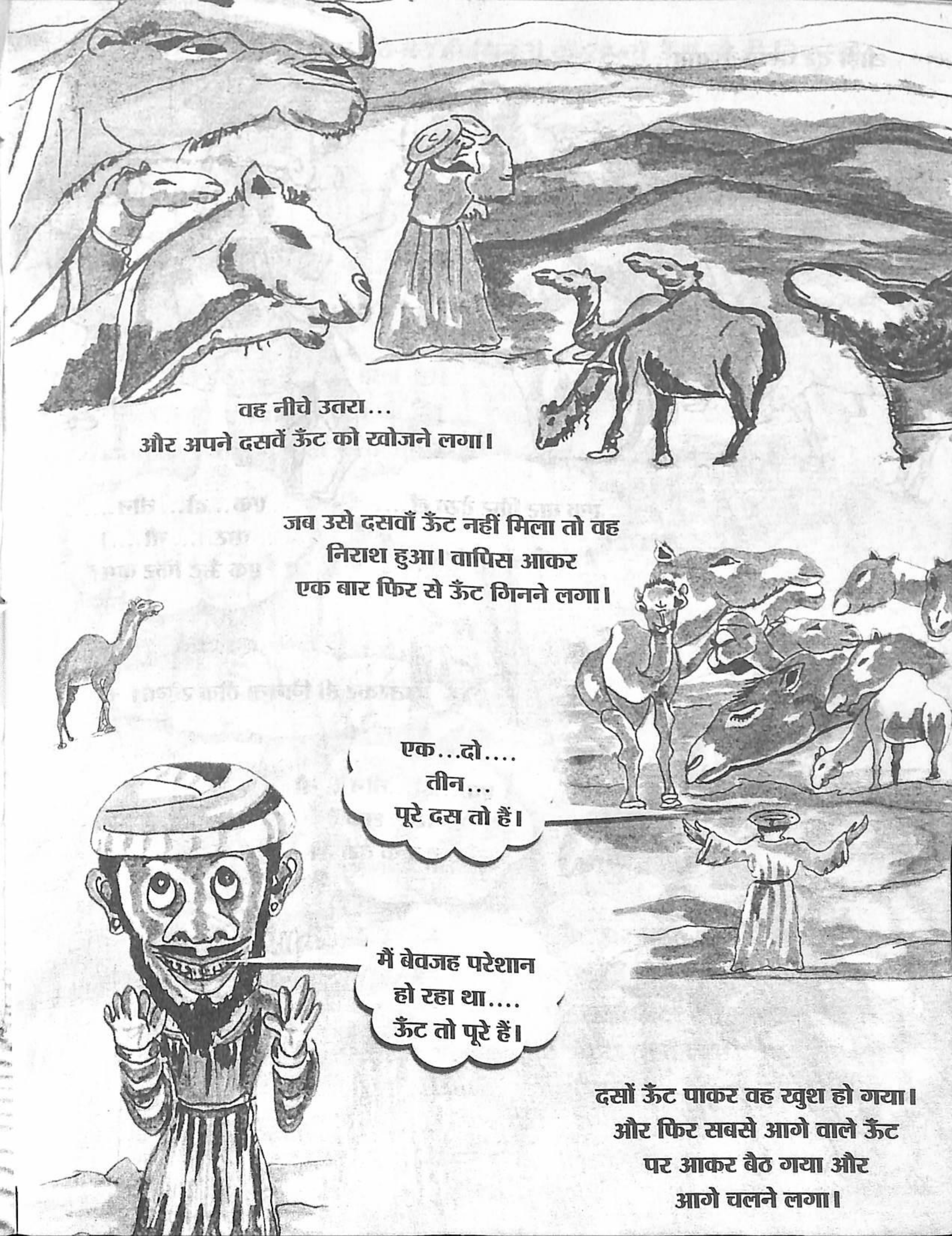
सभी चित्र : कैलाश दुबे

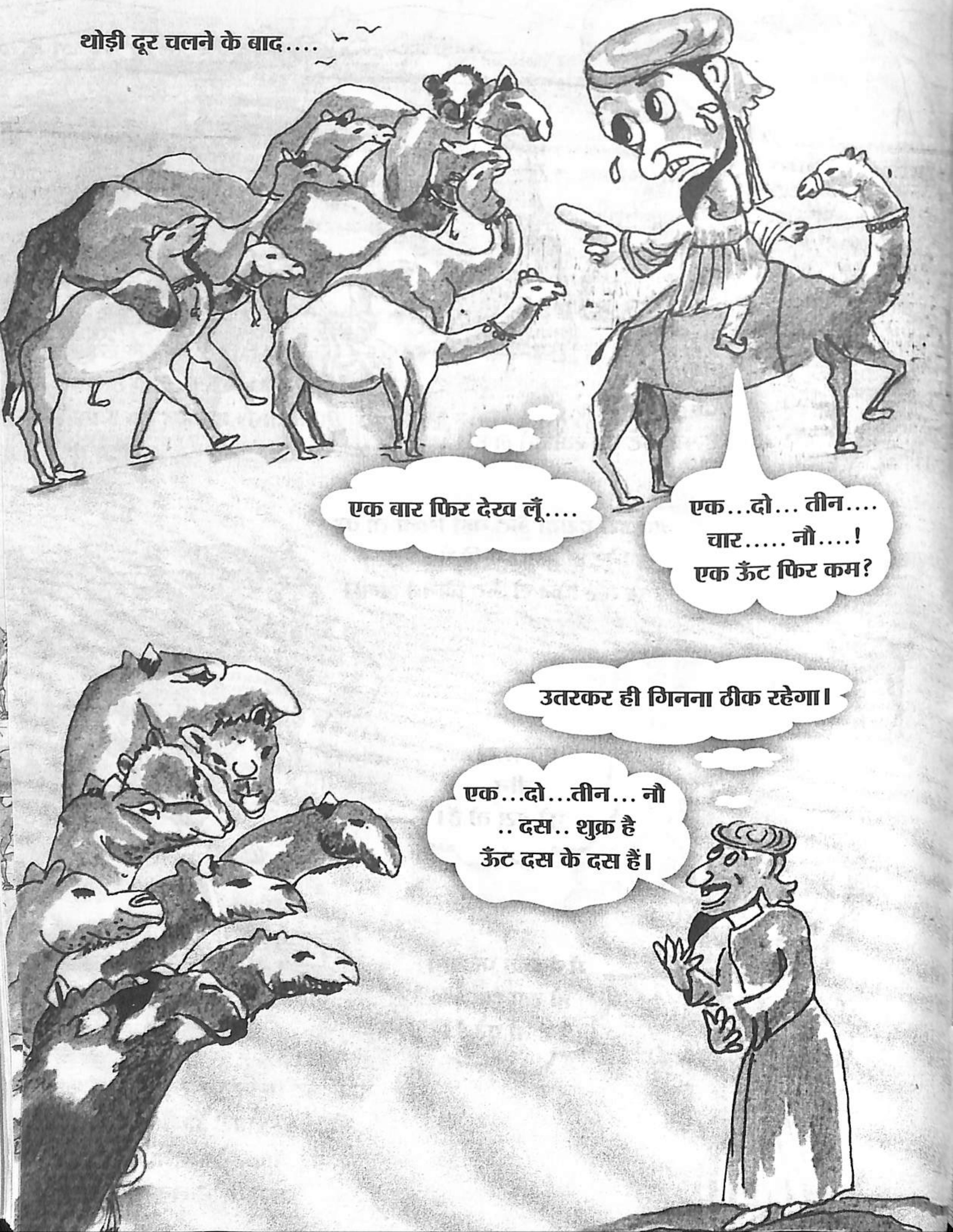


किस्सा हसन का...

एक बार मई की दोपहरी में हसन अपने दस ऊँटों को लिए रेगिस्तान से गुज़र रहा था। एक ऊँट पर स्वयं बैठा था और बाकी नौ ऊँट पीछे चले आ रहे थे। थोड़ा चलने के बाद उसने पीछे मुड़कर यह जायज़ा लेना चाहा कि सारे ऊँट बराबर आ रहे हैं या नहीं।




वह नीचे उतरा...
और अपने दसवें ऊँट को खोजने लगा।
जब उसे दसवाँ ऊँट नहीं मिला तो वह निराश हुआ। वापिस आकर एक बार फिर से ऊँट गिनने लगा।
एक...दो.... तीन... पूरे दस तो हैं।
मैं बेवजह परेशान हो रहा था.... ऊँट तो पूरे हैं।
दसों ऊँट पाकर वह खुश हो गया। और फिर सबसे आगे वाले ऊँट पर आकर बैठ गया और आगे चलने लगा।


थोड़ी दूर चलने के बाद....
एक बार फिर देख लूँ....
एक...दो... तीन.... चार..... नौ....! एक ऊँट फिर कम?
उतरकर ही गिनना ठीक रहेगा।
एक...दो...तीन... नौ .. दस.. शुक्र है ऊँट दस के दस हैं।

हर बार जब वह ऊँट पर बैठे-बैठे ही गिनती करता तो ऊँट नौ ही निकलते।



गर्मी के मारे उसका बुरा हाल था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर एक ऊँट कहाँ चला जाता है।





चित्र- संतोष श्रीवास्तव



माथापच्ची



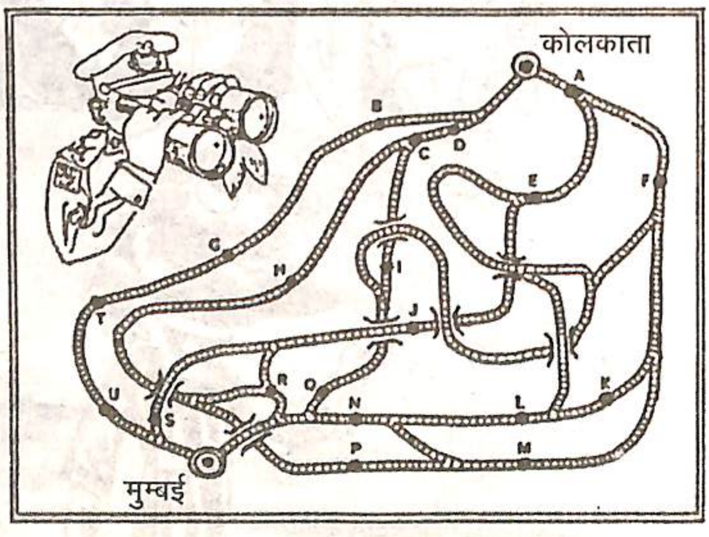
1

ये महोदय नीचे जो तस्वीर देख रहे हैं, वो ऊपर के टुकड़ों में से कुछ को जोड़कर बनाई गई है। हर टुकड़े पर उसका नम्बर भी डला है। क्या तुम बता सकते हो कि कौन-कौन से टुकड़ों को जोड़कर ये तस्वीर बनाई गई होगी?



2

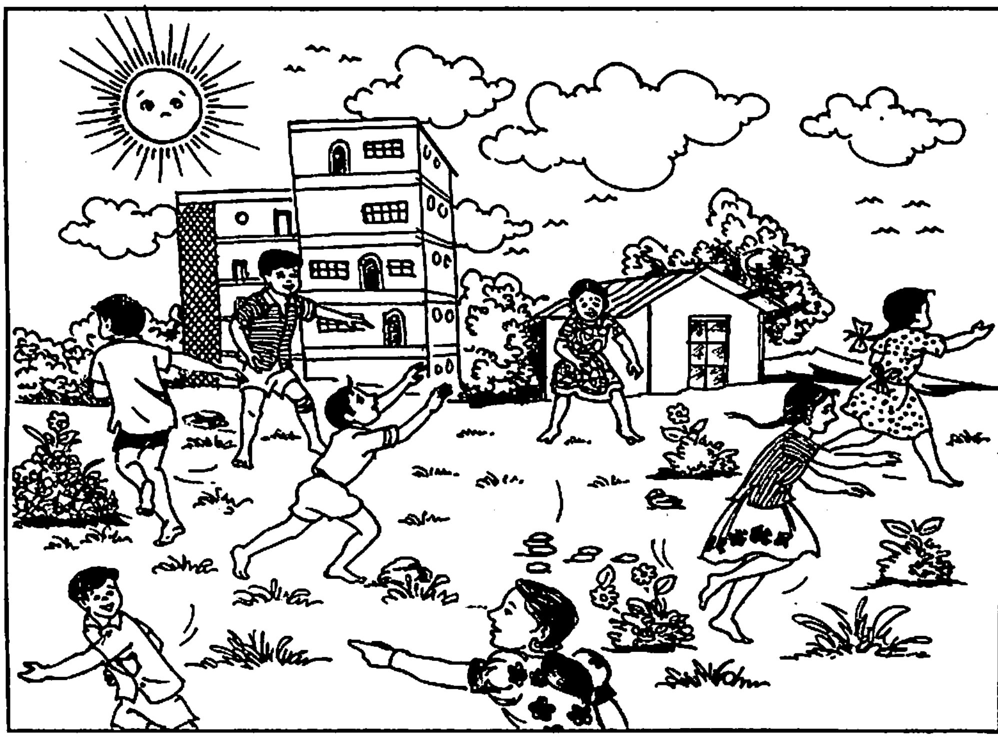
कई रास्ते जोड़ते हैं इन दो शहरों को। हर रास्ते पर कई स्टेशन भी हैं। हर स्टेशन पर रेलगाड़ी रुकती है। बस तुम ज़रा ये बताओ कि किस रास्ते से कम से कम स्टेशन पड़ेंगे। या कहो रेलगाड़ी कम से कम रुकेगी। पर ये भी ध्यान रखना कि रास्ता भी घुमावदार और लम्बा न हो। स्टेशन को काले गोल बिन्दुओं द्वारा दिखाया गया है।





3

....तो तुम भी पिट्ठू खेलोगे! ठीक है! पर पहले ये माथापच्ची तो हल करते जाओ.......। यही कि इन दो तस्वीरों में कुल कितने अन्तर हैं?



4

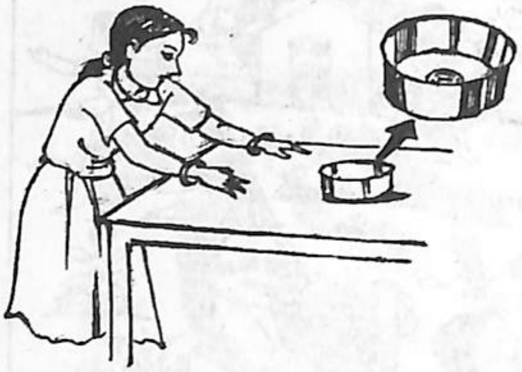
1,1,2,3,5,8,13....
इस कड़ी को देखो। इन अंकों के बीच एक रिश्ता है। इस हिसाब से अगली संख्या क्या होगी?

5

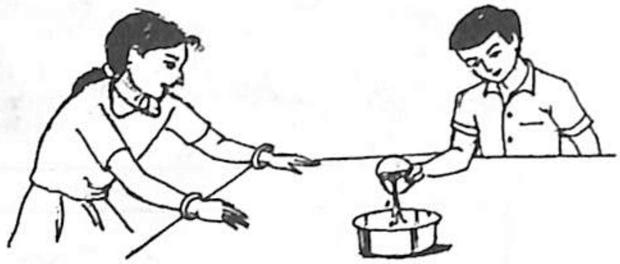
सरासर–सरकार–कारगर–गरजना–जनार्दन!

क्या खासियत है इस शब्दों की लड़ी में? हाँ, एक तो ये सब चार अक्षरों से बने हैं। दूसरे हर दूसरा शब्द पहले शब्द के आखिरी दो अक्षरों से शुरू होता है। जैसे सरासर के आखिरी दो अक्षरों स और र से सरकार! क्या तुम शब्दों की ऐसी ही दो और लड़ियाँ बना सकते हो, जिनमें कम से कम पाँच शब्द हों?

सिक्का गायब सिक्का हाज़िर



ज़रूरी चीज़ें – एक कटोरी, थोड़ा-सा पानी, एक सिक्का! इस प्रयोग को करने के लिए अपने एक दोस्त को भी बुला लो।



एक कटोरी में एक सिक्का रखो। कुछ दूर हटकर एक आँख बन्द कर अपने सिर को इतना झुकाओ कि सिक्का दिखना बन्द हो जाए।



अपने सिर को उसी स्थिति में रखकर दोस्त से कहो कि उस कटोरी में पानी डाल दे। पानी ज़रा आराम से डालना ताकि सिक्का अपनी जगह से हिल न पाए।

पानी डालते-डालते एक स्थिति ऐसी आएगी जब सिक्का तुम्हें दिखने लगेगा। सोचो यह कैसे हुआ? तुम इस बारे में अपने बड़ों से मदद ले सकते हो।

माथापच्ची अक्टूबर अंक के हल

1. एक से ज्यादा उत्तर हो सकते हैं। 9,24,40 उनमें से एक है।

2. गुदगुदी, सनसनी, मलमली, किरकिरी, सरसरी......

वर्ग पहेली अक्टूबर अंक के हल

क	मी	ज़		स	मो	सा
ली		ले		र		इ
	ता	बी	ज			कि
बा	ड़		ग		ता	ल
द			ना	वि	क	
शा		व		वा		ती
ह	ज़ा	र		ह	थे	ली

तेनालीराम का मुण्डन

डॉ श्रीप्रसाद



महाराज कृष्णदेव राय एक राजा हैं। इस नाटक के पात्र हैं महाराज कृष्णदेव राय, तेनालीराम, पाँच अन्य दरबारी, दो सेवक तथा एक नाई। नाटक में एक वाचक भी है और बहुत से बच्चों के दो सहगान भी।

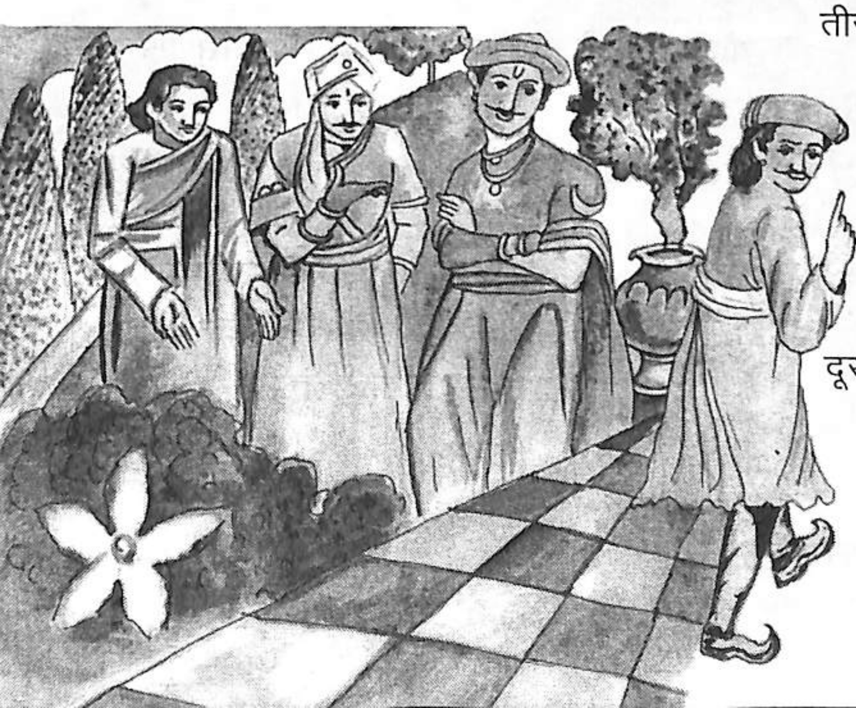
पर्दा उठता है

वाचक - महाराज कृष्णदेव राय के दरबार में
रहते थे तेनाली राम

सहगान - बड़े चतुर थे, हँसते गाते करते थे सब काम
कथा तेनालीराम की बता रहे हैं आज
अच्छी अगर लगे नहीं तो मत होना नाराज़

(वाचक और गाने वाले बच्चे चले जाते हैं)
(बगीचे में कुछ दरबारी टहल रहे हैं)

एक दरबारी - ***(अन्य दरबारियों से)*** भाई साहब, इस तेनालीराम से हम सब बड़े परेशान हैं।



दूसरा दरबारी - क्यों? तेनालीराम से आप क्यों परेशान हैं? क्या तेनालीराम ने आपसे कुछ कहा? कोई कड़वी बात कह दी?

तीसरा दरबारी - आप भाई साहब की बात नहीं समझ पाए। महाराज कृष्णदेव राय के हम भी दरबारी हैं, और तेनालीराम भी। पर अपने महाराज तेनालीराम की ही प्रशंसा करते हैं, हमें घास भी नहीं डालते।

दूसरा दरबारी - तेनालीराम अपनी योग्यता से प्रशंसा पाता है। आप भी योग्य बन जाइए। आपको भी प्रशंसा मिलेगी।



चौथा दरबारी - लगता है तेनालीराम ने आपको कुछ दिया है। तभी आप तेनालीराम की इतनी प्रशंसा कर रहे हैं।

तीसरा दरबारी - ***(दूसरे दरबारी से)*** भगवन, आपका रास्ता अलग है, हमारा अलग। आपको जो करना है करिए। और हमें जो करना है वो हम करेंगे।

दूसरा दरबारी - ठीक है। पर ध्यान रखना, तेनालीराम बहुत होशियार है!

चौथा दरबारी - होंगे आपके लिए, हमारे लिए नहीं।

दूसरा दरबारी - मैं आप लोगों के साथ नहीं रहना चाहता। मुझे क्षमा करें। मैं अपने घर जाता हूँ।

अन्य सभी दरबारी - जाइए जाइए। तुरन्त जाइए।

(दूसरा दरबारी चला जाता है)

पहला दरबारी - चला गया, तेनालीराम की पूँछ चला गया।

चौथा दरबारी - हाँ मित्रो। अब तो सब बरदाश्त के बाहर हो गया है। अब तो कुछ ऐसा करना पड़ेगा कि तेनालीराम को महाराज के सामने नीचा देखना पड़े।

तीसरा दरबारी - तेनालीराम को शतरंज खेलना नहीं आता है।

चौथा दरबारी - हाँ यह सच है। पर इससे अपना काम कैसे बनेगा।

तीसरा दरबारी - इसकी ज़िम्मेदारी हम पर छोड़िए। कल दरबार में आप सब लोग मेरे साथ रहिए और मैं जो कहूँ उसका समर्थन करते जाइए। फिर मैं सब सँभाल लूँगा।

पाँचवाँ दरबारी - ठीक है।

(दृश्य बदलता है। महाराज कृष्णदेव राय का दरबार लगा है। तेनालीराम भी बैठा है।)

तीसरा दरबारी - महाराज आप सब कुछ करते हैं पर शतरंज नहीं खेलते।

एक दरबारी - शतरंज तो राजाओं का खेल है। आप भी शतरंज खेला करिए।

महाराज - किसके साथ खेलूँ। दरबार में किसी को शतरंज आती नहीं है।

तीसरा दरबारी - कैसी बातें कर रहे हैं महाराज। हमारे तेनालीराम जी तो बड़ी अच्छी शतरंज खेलते हैं।

पाँचवाँ दरबारी - बिल्कुल सही बात है। शतरंज के अच्छे अच्छे खिलाड़ी तेनालीराम से मात खा चुके हैं।

चौथा दरबारी - कितनों ने तो तेनालीराम के भय से शतरंज खेलना ही छोड़ दिया।

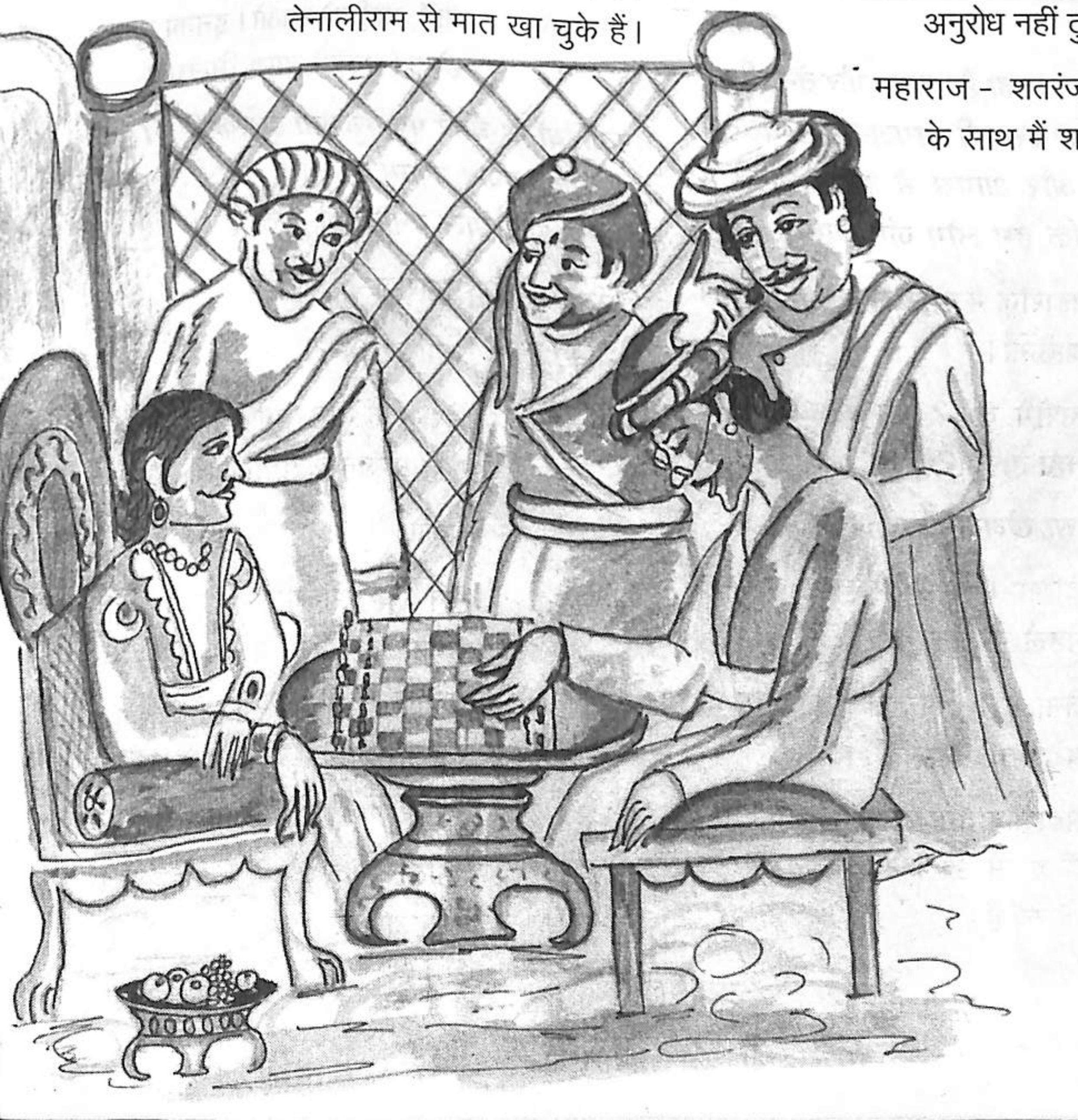
महाराज - वाह! ***(तेनालीराम की ओर देखकर)*** तब हो जाए एक दो बाज़ी।

तेनालीराम - नहीं महाराज मुझे शतरंज नहीं आती। ये लोग ऐसे ही कह रहे हैं। मुझे बिल्कुल शतरंज नहीं आती।

एक दरबारी - तेनालीराम जी आप महाराज का विरोध कर रहे हैं। हमारे महाराज का अनुरोध ठुकरा रहे हैं।

तेनालीराम - महाराज क्षमा करें। मैं आपका अनुरोध नहीं ठुकरा रहा हूँ...पर...

महाराज - शतरंज लाओ। तेनालीराम के साथ मैं शतरंज खेलूँगा।





महाराज - *(गुस्सा करते हुए)* तेनालीराम, मेरी आज्ञा है। तुम ठीक से खेलो। यदि अबकी हारे तो भरे दरबार में तुम्हारा मुण्डन किया जाएगा।

(तेनालीराम खेलने लगता है, महाराज भी खेलने लगते हैं। दरबारी फिर आपस में व्यंग्यपूर्वक इशारे करते हैं। लेकिन तेनालीराम फिर हार जाता है)

महाराज - तेनालीराम, तुम जानबूझकर हार गए हो। तुमने मेरे आदेश का उल्लंघन किया है।

तेनालीराम - नहीं महाराज, मेरा विश्वास करिए। मैं जानबूझकर नहीं हारा हूँ।

महाराज - नहीं, नाई को लाओ। इनका मुण्डन होगा। इनको दण्ड मिलेगा।

(सेवक तुरन्त शतरंज लाता है। राजा और तेनालीराम शतरंज खेलते हैं। दरबारी अगल-बगल बैठकर शतरंज देखते हैं और आपस में इशारे करते हैं मानो कह रहे हों कि हम लोग जीत गए हैं।)

तेनालीराम - महाराज मैं खेल तो रहा हूँ पर हार जाऊँगा।

महाराज - हारोगे क्यों? मन से खेलोगे तो नहीं हारोगे?

(तेनालीराम ज़रा-सा खेलकर हार जाता है)

तेनालीराम - देखिए महाराज मैं हार गया। मैंने पहले ही कहा था कि मैं......

एक दरबारी - तेनालीराम, मन से खेलो। तुम तो बड़े अच्छे खिलाड़ी हो।

चौथा दरबारी - महाराज तेनालीराम से कहिए कि ठीक से खेलें। ये बहुत अच्छा खेलते हैं।

(दरबारियों के चेहरे पर प्रसन्नता झलकती है। इसी समय नाई आकर प्रणाम करता है। नाई छुरा पैना करता है और बाल बनाने को होता है।)

तेनालीराम - महाराज

महाराज - क्या बात है?

तेनालीराम - मेरी एक बात सुन लीजिए। फिर मेरा मुण्डन करा दीजिए।

महाराज - बोलो।

तेनालीराम - मैंने एक आदमी से पाँच हज़ार रुपए उधार लिए हैं। बदले में मैंने ये बाल गिरवी रख दिए हैं। क्योंकि मेरे पास गिरवी रखने को कुछ न था। इसलिए ये बाल मेरे नहीं है।

महाराज - तेनालीराम के घर पाँच हज़ार रुपए भेजे जाएँ।

एक सेवक - जी, मैं रुपए लेकर जाता हूँ।

महाराज - अब मुण्डन करो।

तेनालीराम - महाराज मैं अकेला हूँ। पत्नी को छोड़कर मेरा कोई नहीं है। जिसका कोई नहीं होता, उसके माता पिता राजा ही होता है। और बाल माता पिता के मरने पर ही कटवाए जाते हैं। आपका कोई अहित न हो इसलिए मैं मन्त्र पढ़ रहा हूँ।

महाराज - ऐसा है। तब बाल मत काटो। *(कुछ रुककर)* तेनालीराम तुमको क्षमा किया।

(दरबारियों के चेहरों पर उदासी है। सभी पात्र स्थिर रह जाते हैं।)

वाचक - *हमारा नाटक खत्म हुआ*

बात कितनी कह पाए हम

आप दर्शक जन ही जानेंगे

बुरा अच्छा पहचानेंगे

आपके सेवक हैं हम सब

आपसे विदा, आपसे विदा....

(सभी कलाकार दर्शकों को हाथ जोड़ते हैं।)

परदा गिरता है

सभी चित्र : संतोष श्रीवास्तव





चकमक समाचार

घुमन्तु पुस्तकालय

क्या तुम्हारे आसपास कोई ऐसी जगह है जहाँ तुम्हें ढेरों किताबें पढ़ने को मिलती हों?



भिलाई छत्तीसगढ़ का एक शहर है। यहाँ एक चलता-फिरता पुस्तकालय है। यह पुस्तकालय एक रिक्शे में चलता है। इसमें अंदाज़न तीन सौ किताबें होती हैं। इसके अलावा कुछ खेल सामग्री और एक टेप रिकॉर्डर भी होता है। यानी पढ़ने के साथ-साथ बच्चे गाने भी सुन सकते हैं।

यह रिक्शा उन बस्तियों में फेरी लगाता है जहाँ के लोगों की आय बहुत कम है। जहाँ के बच्चों को पढ़ने के मौके ही नहीं मिल पाते हैं। इस किताबी रिक्शे का नाम पिटारा है। यह ज़िला साक्षरता समिति दुर्ग के जनशाला कार्यक्रम का हिस्सा है। रिक्शे उर्फ पिटारा को बच्चों तक पहुँचाने का काम जेनो नाम की एक लड़की करती है।

जीवोदय में नाटक कार्यशाला

20 से 26 अक्टूबर तक इटारसी की जीवोदय संस्था में एक नाटक कार्यशाला हुई। इस कार्यशाला में लगभग 24 बच्चों ने भाग लिया। जीवोदय प्लेटफॉर्म के बच्चों के साथ काम करने वाली संस्था है। चकमक के सितम्बर अंक में इस संस्था के काम के बारे में तुमने पढ़ा होगा।

नाटक कार्यशाला में प्रमुख रूप से अभिनय तथा उससे जुड़ी ज़रूरी बातों का प्रशिक्षण दिया गया। पहले दिन ध्यान के साथ कार्यशाला शुरू हुई। ताली की आवाज़ के साथ अलग-अलग पात्रों का अभिनय करना तथा मूक अभिनय इस दिन के मुख्य अभ्यास थे।

दूसरे दिन से लगातार अभिनय का प्रशिक्षण सत्र चला। मंच के हिसाब से चलना, स्वयं को मूर्ति की तरह स्थिर रखना, अलग-अलग तरह के दृश्य बनाना, ध्यान केन्द्रित करना आदि कुछ गतिविधियाँ हुईं।

मूर्ति बनने की प्रक्रिया में शरीर को अलग-अलग आकार में ढालने की कोशिश की जाती। बच्चों की संख्या बढ़ाकर भी यह अभ्यास कराया गया, जैसे दो तीन लोग मिलकर एक मूर्ति बनाएँ। इन मूर्तियों को देखने वाले उसे क्या समझ रहे हैं और बनाने वाले ने क्या सोचकर बनाया है, इस बात पर खूब चर्चा होती।

ध्यान बढ़ाने के लिए भी कुछ खेल हुए। जैसे बच्चों को दो टीमों में आमने सामने खड़ा किया गया। दोनों टीमों के हर सदस्य को नंबर दिया गया। कोई एक नंबर पुकारा जाता। दोनों टीम के उस नंबर वाले बच्चे दौड़कर बीच में रखी वस्तु को पकड़ने की कोशिश करते। जीतने वाले बच्चे को नंबर मिलते। लाइन में चलकर बिना लाइन तोड़े अलग-अलग आकृति बनाने का भी अभ्यास कराया गया।

भागीदारी कर रहे बच्चों से उनके जीवन से जुड़ी कहानी बनाने की बात कही गई। बच्चों का कहना था कि वे अपने जीवन की उन घटनाओं को याद नहीं करना चाहते जिनके कारण वे बेघर हो गए। फिर बच्चों को कुछ कहानियाँ पढ़ने को दी गईं।

गुलेलबाज़ लड़का बोधराज नाम के एक लड़के की कहानी है। जो गुलेल से पक्षिओं को मारा करता है। उसकी इस आदत से माँ, दोस्त सभी परेशान रहते हैं।
एक दिन बोधराज एक मैना के घोंसले पर गुलेल साधता है। वह देखता है कि एक चील मैना के घोंसले की ओर बार–बार आती है। उसका दोस्त कहता है कि चील मैना के बच्चों को मार डालेगी। बोधराज चील को गुलेल से मारता है जिससे वह वहाँ से उड़ जाती है लेकिन बाद में चील वापस घोंसले की ओर आने लगती है। ऐसा कई बार होता है। बोधराज मेज़ के सहारे छत पर चढ़कर मैना के बच्चों को पानी पिलाता है। चील से वह मैना के बच्चों की हिफाज़त करता है। बोधराज में हुए इस हृदय परिवर्तन पर लोगों को आश्चर्य होता है।

आखिर में बच्चों ने भीष्म साहनी की एक कहानी चुनी -- **गुलेलबाज़ लड़का**। इस कहानी को नाटक में बदला गया। नाटक की अंतिम रिहर्सल कार्यशाला की समाप्ति पर की गई। यह तय हुआ कि इस नाटक का मंचन बाल दिवस पर किया जाएगा।

रपट : शिवनारायण

पटाखे बंद हों

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में पिछले महीने पटाखों के खिलाफ अपील हुई। यह अपील सौ बालश्रमिकों ने की। वे पटाखा बाज़ार के सामने घण्टे भर मौन खड़े रहे। उन्होंने इस विषय पर पर्चे भी बाँटे। विभिन्न बस्तियों से आए इन बच्चों की मंशा थी कि पटाखों पर पाबंदी लगे। उन्हें उन सैंकड़ों बच्चों की चिन्ता भी है जो इस जोखिम भरे काम में मजबूरन लगे हैं। तुम्हें क्या लगता है?



खेल समाचार

अफ्रो-एशियाई खेल...



पिछला महीना खेलों से भरा पूरा रहा। क्रिकेट मुकाबले हुए, हॉकी हुई और पहले अफ्रो-एशियाई खेल हुए। एफ्रो-एशियाई खेलों में एशिया और अफ्रीका महाद्वीप की टीमों ने भाग लिया। चीन ने सबसे ज़्यादा सोने के तमगे जीते और पहला स्थान हासिल किया। हम दूसरे नम्बर पर रहे। हमने कुल अस्सी पदक जीते। इनमें उन्नीस सोने के पदक हैं। चीन ने कुल इकतालीस यानी हमसे आधे के बराबर पदक जीते। टेनिस आने वाले समय में हमें उम्मीद बँधाता है। भारत ने टेनिस में दाँव पर लगे सभी सात स्वर्ण जीते। सानिया मिर्ज़ा ने शानदार खेल दिखाया। हॉकी का स्वर्ण पदक भी हमने जीता। फायनल में हमारा मुकाबला पड़ोसी देश पाकिस्तान से था। इस ज़ोरदार मुकाबले में हम जीत गए। भारतीय फुटबॉल टीम फायनल तक पहुँची। पर फायनल में हम उज़्बेकिस्तान से जीत न सके।





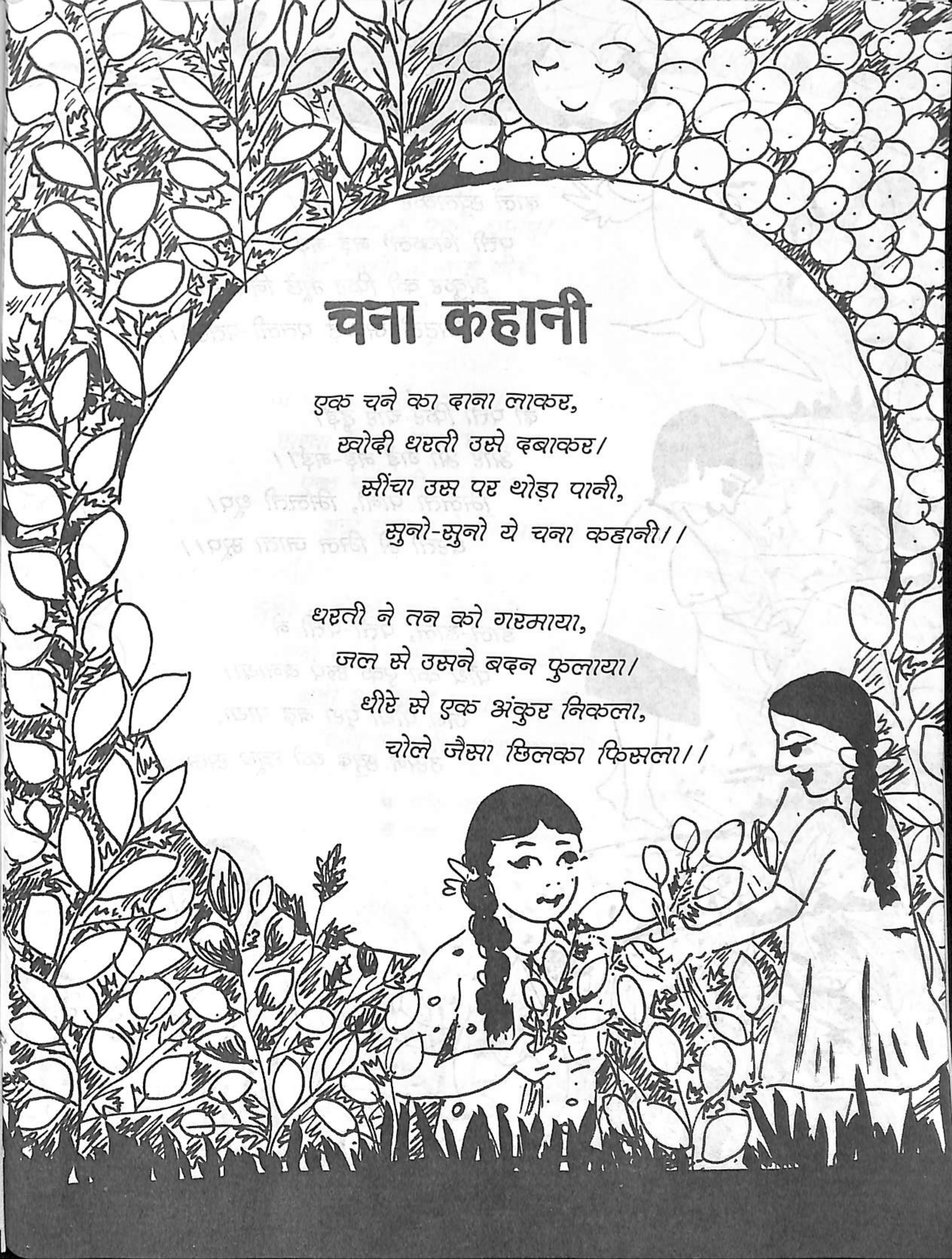
क्रिकेट

इन दिनों हम ऑस्ट्रेलिया व न्यूज़ीलैण्ड की टीमों के साथ तिकोनी शृंखला खेल रहे हैं। अभी तक चार - पाँच मैच हो चुके हैं। पहला मैच तो बारिश की वजह से हो ही नहीं पाया था। दूसरे में हमारी टीम ने ऑस्ट्रेलिया को पटखनी दे दी थी। अगले ही मैच में उन्होंने हमें और ज़्यादा ज़ोर की पटखनी दे दी। न्यूज़ीलैण्ड को भी ऑस्ट्रेलिया ने दो बार बड़े अन्तर से हराया। अंक तुम तक पहुँचेगा तब तक तो फैसला ही हो चुका होगा। फायनल मैच अठारह नवम्बर को खेला जाएगा।



शतरंज

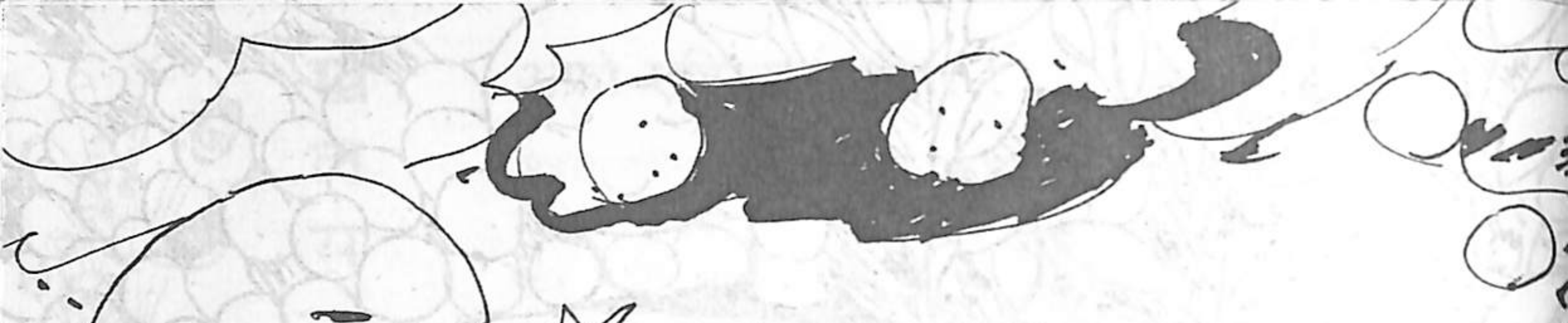
फ्राँस में चल रही विश्व रैपिड शतरंज प्रतियोगिता में विश्वनाथन आनंद ने चैम्पियन खिलाड़ी व्लादीमीर क्रैमनिक को हरा दिया है। यह चैम्पियनशिप उन्होंने 1.5 – 0.5 अंकों से जीती।



चना कहानी

एक चने का दाना लाकर,
खोदी धरती उसे दबाकर।
सींचा उस पर थोड़ा पानी,
सुनो-सुनो ये चना कहानी।।

धरती ने तन को गरमाया,
जल से उसने बदन फुलाया।
धीरे से एक अंकुर निकला,
चोले जैसा छिलका फिसला।।



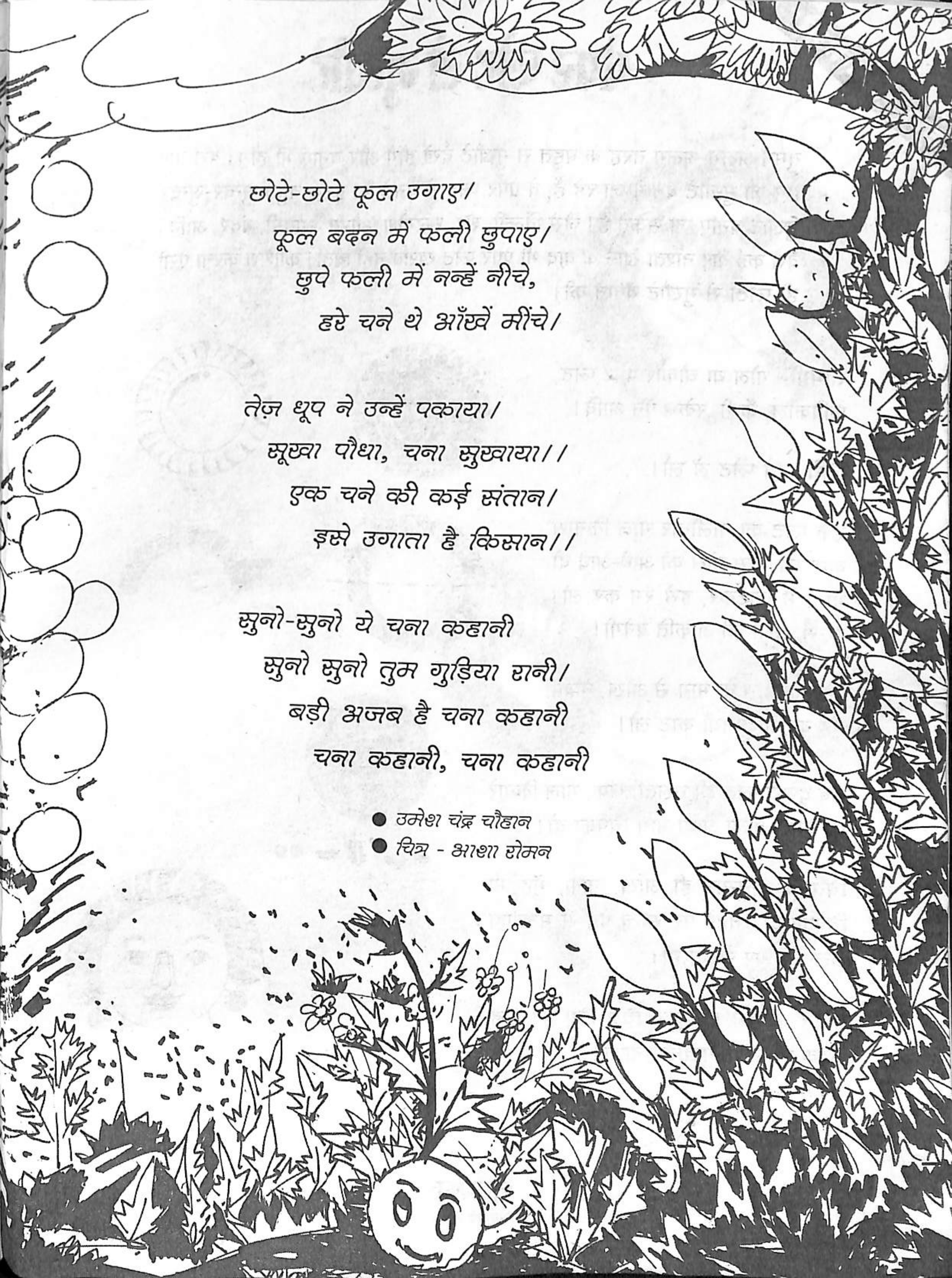


दालें खुलकर फैल गईं।
पत्ती निकली नई-नई।।
अंकुर की फिर मूछें निकलीं।
मिट्टी जकड़े पतली-पतली।।

दो पत्ती फिर चार हुईं।
और आ गईं नई-नई।।
मिलता पानी, मिलती धूप।
धरती से मिल जाता सूप।।

डाल-डाल, पत्ती-पत्ती ने
पौधे का एक रूप बनाया।
जब पौधा पूरा बढ़ पाया,
उसने खुद को खूब सजाया।।





छोटे-छोटे फूल उगाए।
फूल बदन में फली छुपाए।
छुपे फली में नन्हे नीचे,
हरे चने थे आँखें मींचे।

तेज़ धूप ने उन्हें पकाया।
सूखा पौधा, चना सुखाया।।
एक चने की कई संतान।
इसे उगाता है किसान।।

सुनो-सुनो ये चना कहानी
सुनो सुनो तुम गुड़िया रानी।
बड़ी अजब है चना कहानी
चना कहानी, चना कहानी

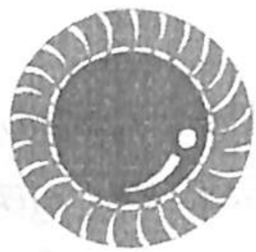
● उमेश चंद्र चौहान
● चित्र - आशा रोमन

तुम भी बनाओ

पेपर प्लेट से मुखौटे

तुमने अलग-अलग तरह के बहुत से मुखौटे देखे होंगे और बनाए भी होंगे। इस बार हम जो मुखौटे बनाने जा रहे हैं, वे पेपर प्लेट से बनते हैं। इनसे बहुत सुन्दर-सुन्दर मुखौटे बनाए जा सकते हैं। जैसे बिल्ली, शेर, खरगोश, औरत, आदमी, बंदर, आदि। वैसे कई बार नाश्ता खाने के बाद भी पेपर प्लेट खराब नहीं होतीं। कोशिश करना ऐसी ही प्लेटों से मुखौटे बनाने की।

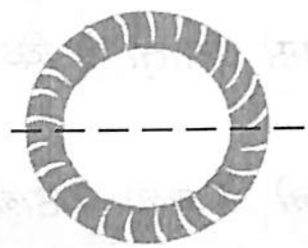
सामग्री - गोल या चौकोर पेपर प्लेट, फेविकोल, कैंची, स्केच पेन आदि।





विधि - दो प्लेट ले लो।

एक प्लेट का नालीदार गोल किनारा काट लो। इस गोले को आधे-आधे दो भागों में काटकर, इसे रंग कर लो। इससे बालों की आकृति बनेगी।





प्लेट के बीच के भाग से आँख, नाक, मुँह की आकृतियाँ काट लो।



अब दूसरी प्लेट की उलटी तरफ, गोल किनारे पर बालों वाला आधा भाग चिपका दो।



चित्र के अनुसार ही आँख, नाक, मुँह भी चिपका दो। चेहरे पर स्केच पेन से मनचाहा कलर भी भर सकते हो।

सामने के पेज पर कुछ चित्र दिए हैं। इन्हें देखकर और भी मुखौटे बनाओ।



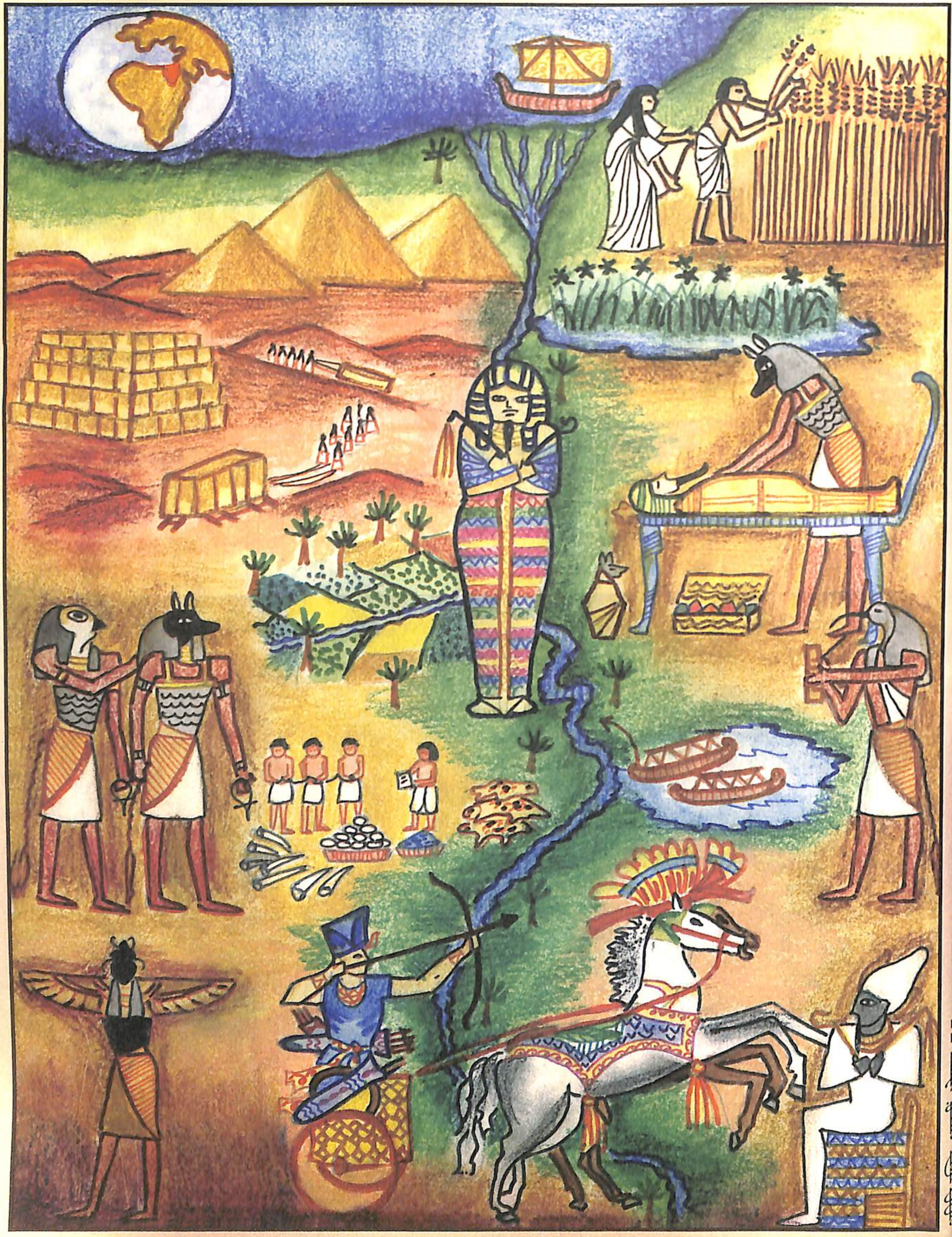
➤ *प्रेम कुमार मनमौजी*

➤ *चित्र - विवेक वर्मा*



मुखौटे : प्रेमकुमार मनमौजी, उज्जैन, म.प्र.

फोटो : विनोद भटनागर, उज्जैन, म.प्र.



रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद राय